الطريق إلى الإسلام

इस्लाम का रास्ता

بـاللغـة الهندية

इस्लाम का रास्ता

लेखक :

मुहम्मद बिन इब्राहीम अलहम्द

अनुवाद :

अब्दुल करीम सलफी

दारूल वरक़ात अल–इल्मिय्या प्रकाशक एवं वितरक

सऊदी अरब, पोस्ट बाक्स न॰ 32659 रियाद 11438

टेलीफून: 4228837

विषय-सूची

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

भूमिका

अलहम्दु लिल्लाहि वस्सलात वस्लामु अ़ला रसूलुल्लाहि व अ़ला आलिहि सहबिहि व मनिहतदा बिहुदा।

अम्मा बाद! सौभाग्य व सदाचार एक आवश्यक अपेक्षित उद्देश्य व लक्ष्य हैं और इस धरती पर बसने वाला हर मनुष्य अपने आपको प्रसन्न रखने और दुख व कष्ट को दूर रखने का प्रयास करता है।

मनोवैज्ञानिक, बुद्धिजीवी और दार्शनिक सौभाग्य व सदाचार की प्राप्ती के साधनों एवं दुख व कष्ट को दूर करने वाले कारणों की खोज में रात दिन लगे रहते हैं और इस सिलसिले में हर एक का अपना एक दृष्टिकोण है और हर मनुष्य अपने मार्ग से भली प्रकार परिचित है इसके फलस्वरूप अधिकांश लोगों का सौभाग्य व प्रसनता अधूरी व अपूर्ण और भ्रमित होती है नशीली वस्तु की तरह कि उसका इस्तेमाल करने वाला पहले पहले तो आनन्द प्रतीत करता है और जब उसका नशा उतरने लगता है तो सारे दुख व परेशानियां वापस पलट आती हैं।

इसका कारण यह है कि लोग वास्तविक और सच्चे सौभाग्य की प्राप्ती के लिए जो मौलिक कारण है उससे अनभिज्ञ रहते हैं और वह है अल्लाह तआ़ला पर ईमान व

पूर्ण विश्वास। अतएव यही सौभाग्य व सदाचार का रहस्य उसकी प्राप्ती का सबसे उत्तम रास्ता है अतः अमर और सच्चा सौभाग्य उसी को प्राप्त हो सकता है जो अल्लाह तआला पर ईमान लाता और उसके रास्ते को अपनाता है और ऐसा ही मनुष्य दुनियां व परलोक में भला व सदाचारी होगा।

यह पुस्तक जो आपके हाथ में है आपको बड़े सौभाग्य की ओर बुलाती है इसलिए कि यह आपके उस पालनहार पर ईमान लाने की ओर आपका मार्ग दर्शन करती है जिसने आपको पैदा किया और आपको इस सच्चे अक़ीदे पर उभारती है जिसकी पुष्टि आपकी बुद्धि और आपकी प्रकृति करती है और इस पुस्तक के आने वाले पृष्ठों से आपको मनुष्य की सृष्टि का आरभ व अन्त और उसके पैदा करने का उद्देश्य व लक्ष्य आदि मालूम होगा। अतएव यह पुस्तक आपको उस दीन इस्लाम से परिचित कराएगी जो अल्लाह का अन्तिम दीन है और जिसे उसने अपने समस्त प्राणियों के लिए पसन्द किया है उनको इसमें प्रवेश करने का आदेश दिया है।

इस पुस्तक के अध्ययन के समय आपके सामने उस दीन (इस्लाम) की महानता और उसकी शिक्षाओं का महत्त्व और उनके हर युग व काल और हर जाति के लिए उसका उपयोगी होना मालूम होगा। इसके अध्ययन के बाद भी यदि आप किसी चीज़ का विवरण चाहते हैं तो आप स्वयं खोजबीन करें और कठिन बातों के बारे में सवाल करें इसलिए कि इस्लाम एक खुला हुआ दीन है। इसका दरवाज़ा न किसी के लिए बन्द होता है और न ही वह अत्याधिक व मतभेद वाले सवालों से तंग होता है। दीन इस्लाम में हर सवाल का जवाब और हर समस्या का समाधान व हर मामले से संबंधित आदेश मौजूद हैं।

मानवता की कहानी

मानवता की कहानी उस समय से आरंभ होती है जब अल्लाह ने मनुष्य के बाप आदम को अपने सम्मानित हाथों से मिट्टी से जन्म दिया और उनमें आत्मा को प्रविष्ठ किया और उनको समस्त वस्तुओं, चिड़ियों, जानवरों आदि के नाम सिखाए और उनकी और अधिक प्रतिष्ठा व मान सम्मान के लिए फ़रिश्तों को आदेश दिया। ताकि वे उनको सज्दा करें। अतएव सारे फ़रिश्तों ने सज्दा किया परन्तु इब्लीस (शैतान) ने इन्कार किया और घमंड किया तो अल्लाह ने उसे अपमानित करके आसमानों से नीचे धकेल दिया और उसके बारे में अपमान, तिरस्कार, फटकार व जहन्नम का निर्णय कर दिया। इसके बाद शैतान ने अल्लाह से क़ियामत तक के लिए छूट मांगी तो अल्लाह ने **फ़रमाया**-﴿إِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ﴾ "ठीक है तुझे निर्धारित समय अर्थात क़ियामत तक छूट है। तो इब्लीस ने कहा: ﴿فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ﴾ "मुझे हुज़ूर की इज़्ज़त की कसम है कि मैं उन सब को बहकाऊँगा लेकिन उनमें से तेरे खालिस बन्दों पर मेरा प्रभाव नहीं होगा।" बोला: ﴿فَبِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ ثُمَّ لَآتِيَنَّهُم مِّن بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَن شَمَائِلِهِمْ وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ﴾

"चूंकि तूने मुझे भटकाया (गुमराह किया है) इस लिए मैं उनको रोकने के लिए तेरी सीधी राह में बैठूँगा। फिर उनके आगे और पीछे से दायें और बायें से (बहकाने और गुमराह

करने के लिए) आऊँगा और तू उनमें से अक्सर को शुक्रगुजार न पायेगा। अल्लाह ने कहा:

﴿اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوماً مَدْحُوراً لَمَن تَبِعَكَ مِنْهُمْ لأَمْلأَنَّ جَهَنَّمَ مِنكُمْ أَجْمَعِينَ﴾

"अपमानित और रूस्वा होकर इस गरोह से निकल जा जो उनमें से तेरे पीछे होगा (और तेरे जाल में फंसेगा) मैं तुम सब को जहन्नम में डालूँगा।"

इस प्रकार अल्लाह ने उसको जन्नत से निकाला और उसे पथ भ्रष्ट करने और वसवसा डालने की शक्ति प्रदान करते हुए क़ियामत तक के लिए छूट दे दी ताकि उसका गुनाह अधिक से अधिक हो और उसकी यातना और उसका प्रकोप बढ़ जाए और ताकि अल्लाह उसे ऐसी कसौटी बना दे जिसके आधार पर भले व बुरे में पता किया जा सके। फिर इसके बाद अल्लाह ने आदम से उनकी पत्नी हव्वा को पैदा किया ताकि वे उनसे सुख प्राप्त कर सके और इन दोनों को आदेश दिया कि वे उसकी दयालुता वाली जन्नतों में रहें जिसमें ऐसी चीज़ें हैं जिसको किसी आंख ने देखा है और न किसी कान ने सुना है और न किसी मनुष्य के दिल ने सोचा। और अल्लाह ने इन दोनों से कहा कि इब्लीस तुम्हारा खुला दुश्मन है और उनकी परीक्षा हेतु जन्नत के वृक्षों में से एक वृक्ष के खाने से रोका तो शैतान ने उनके दिलों में भ्रम डाला और उनके लिए इस वृक्ष से खाने को अलंकृत कर दिया और इन दोनों के लिए अपने को हितैषी होने की उनसे कसम खायी और

कहा कि यदि इस वृक्ष से तुम दोनों खा लेते हो तो सदा के लिए यहीं रहोगे।

इस प्रकार शैतान इन दोनों को बराबर बहकाता रहा यहां तक कि उनको भटकाने में सफ़ल हो गया और इन दोनों ने उस वृक्ष से खा लिया और अपने पालनहार की अवज्ञा कर डाली और फिर अपने इस किए पर दोनों अत्यन्त लज्जित हुए और अपने पालनहार से क्षमा याचना की तो अल्लाह ने इन दोनों को क्षमा कर दिया और इन दोनों को चुन लिया परन्तु अल्लाह ने इन दोनों को अपार नेअमतों भरी जन्नत से निकालकर परिश्रम, संकट व परेशानी वाली दुनिया में उतार दिया और आदम इस धरती पर पहुंच गए और अल्लाह ने इनको ऐसी सन्तान प्रदान की जो आज तक निरंतर बढ़ती जा रही है। फिर अल्लाह ने इनको मौत दी और जन्नत में दाखिल कर लिया।

आदम अलैहि0 और उनकी पत्नी को धरती पर उतारने के समय ही से आदम की सन्तान और इब्लीस व उसके शिष्यों के बीच दुशमनी व टकराव चल रहा है ताकि मानव जाति को सही मार्ग से भटका दे। उनको भलाई व सदकर्मो से वंचित रखे और बुराई उनके लिए सजाकर प्रस्तुत करे और उनको हर एक वस्तु से दूर रखें जिससे अल्लाह प्रसन्न व खुश होता है ताकि आदम की सन्तान दुर्भाग्य का शिकार हो और अख़िरत में जहन्नम में दाखिल हो।

अल्लाह ने अपनी सृष्टि को व्यर्थ ही नहीं पैदा किया और

न ही उनको बेकार छोड़ा बल्कि उनकी ओर ऐसे दूत भेजे जिन्होने उनके लिए अल्लाह की उपासना के बारे में बताया और जीवन् के नियमों को प्रस्तुत किया और उनको दुनिया व आखिरत के सौभाग्य से सुशोभित किया। अतएव अल्लाह ने मनुष्य व जिन्नों को इस बात से अवगत किया कि जब तुम्हारे पास मेरी कोई किताब या मुझसे और मेरी प्रसन्नता के निकट करने वाली चीज़ों की ओर मार्गदर्शन करने वाला कोई ईशदूत आए तो तुम उसका अनुसरण करो। इसलिए कि जिसने अल्लाह के रास्ते का अनुसरण किया और उसकी किताबों और ईशदूतों पर और किताबों की शिक्षा और रसूलों के आदेशों पर ईमान लाया उसे किसी का भय नहीं और न ही वह पथ भ्रष्ट हुआ बल्कि वह दुनिया और आखिरत के सौभाग्य से सुशोभित हुआ। इस प्रकार मानवता की कहानी का आरंभ हुआ और आदम और उनके बाद उनकी सन्तान दस सदियों तक अल्लाह के एकेश्वरवाद और उसके आज्ञापलन पर जमी रही। फिर बहुदेववाद का अस्तित्व हुआ और अल्लाह के साथ ग़ैर अल्लाह की उपासना की जाने लगी।

अल्लाह ने अपना पहला रसूल नूह को भेजा जो लोगों को अल्लाह की उपासना और बहुदेववाद से दूरी की ओर आहवान करते रहे। फिर इसके बाद बहुत से ईशदूत विभिन्न समयों और स्थानों पर आगे पीछे आते रहे और जिनकी शरीअ़तों में मौलिक चीज़ों में समानता थी और वह मौलिक चीज़ इस्लाम की ओर आहवान करना, केवल अल्लाह की उपासना करना और ग़ैर अल्लाह की उपासना से दूर रहना है यहां तक कि

इबराहीम अलैहि0 आए और उन्होंनें अपनी जाति को बुतों की पूजा छोड़ने और केवल अल्लाह की ओर बुलाया। फिर इनके बाद उनकी सन्तान इसमाईल, इसहाक़ में नुबुवत का सिलसिला चलता रहा। इसके बाद नुबुवत का सिलसिला इसहाक़ की सन्तान में चलता रहा। इसहाक़ की सन्तान में बड़े महत्वपूर्ण नबियों में से याकूब, यूसुफ, मूसा, दाऊद, सुलेमान और ईसा अलैहिस्सलाम हैं और ईसा के बाद बनी इसराईल में कोई नबी नहीं हुआ फिर नुबुवत इसमाईल की सन्तान में दाख़िल हुई और अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्ल. को अन्तिम नबी के रूप में चुना ताकि आपकी अन्तिम रिसालत और आप पर उतारी हुई किताब कुरआन मजीद मानवता के लिए अल्लाह का अन्तिम सन्देश माना जाए। इसी कारण आपकी रिसालत पूर्ण, सम्पूर्ण और दुनिया के समस्त जिन्नों व मनुष्यों के लिए और हर युग व हर जाति व समुदाय के लिए उचित और सही है। आपने हर भलाई की ओर मार्ग दर्शान किया और हर बुराई से रोका, अल्लाह के निकट मुहम्मद सल्ल0 के लाए हुए दीन के अलावा किसी का कोई दीन स्वीकार योग्य नहीं।

मुहम्मद सल्ल0 की नुबुवत और उनका संक्षिप्त जीवन चरित्र

मुहम्मद सल्ल0 की नुबुवत और उनके जीवन चरित्र के संबध में बात बड़ी लम्बी है। उलमा ने इस बारे में बहुत सी पुस्तकें लिखी हैं। यह अवसर लम्बी बातचीत का नहीं है। इससे पूर्व यह बात बतायी जा चुकी है कि मुहम्मद सल्ल0 की रिसालत अन्तिम रिसालत है और आप पर उतारी हुई किताब 'कुरआन मजीद' अन्तिम आसमानी किताब है।

1: नुबुवत के संकेत

अल्लाह ने नबी अकरम सल्ल0 के लिए बहुत सी चीजें तैयार कीं जो आप की नुबवत की भूमिका थी।

1. **इब्राहीम अलैहि0 की दुआ और ईसा अलैहि0 की शुभ सूचना और आपकी मां आमना का सपना।** नबी सल्ल0 अपने बारे में स्वयं फ़रमाते हैं "मैं इब्राहीम की दुआ और ईसा की शुभ सूचना हूं और मेरी मां ने मेरे गर्भ के समय यह सपना देखा कि उनसे एक प्रकाश फूटा जिसने शाम की धरती बसरा तक को रोशन कर दिया"

नबी सल्ल0 के कहने का तात्पर्य यह है कि मैं इब्राहीम की दुआ का नतीजा इसलिए कि इब्राहीम अलैहि0 ने अपने बेटे इसमाईल के साथ मक्का में काबा के निर्माण के समय कहा था।

﴿رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنَ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةً مُسْلِمَةً لَكَ وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ.

"ऐ हमारे पालनहार! तू हम से इस (नेक काम) को क़ुबूल कर। तू ही सुनता और जानता है। ऐ हमारे मौला! हम को अपना आज्ञाकारी बन्दा बना और हमारी औलाद में से भी एक गरोह को अपना आज्ञाकारी कीजियो और तू हम को हमारी उपासना के तरीके बता और तू हम पर रहम फ़रमा। तू ही है तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान"।

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلاً مِنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ آيَاتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ﴾

"ऐ हमारे पालनहार! तू उन ही में से एक रसूल पैदा कीजियो, जो उनको तेरी आयतें पढ़ कर सुना दे और आसमानी किताब और सदाचार की बातें उनको सिखा दे और उनको पाक साफ कर दे। निस्सन्देह तू प्रभुत्वशाली और बड़ी हिक्मत वाला है"।

तो अल्लाह ने इब्राहीम व इसमाईल की दुआ स्वीकार की उनकी सन्तान में से मुहम्मद सल्ल0 को अन्तिम नबी चुन लिया और ईसा अलैहि0 की शुभ सूचना का मतलब यह है कि अल्लाह के नबी ईसा अलैहि0 ने मुहम्मद सल्ल0 के नबी होने की शुभ सूचना दी थी जैसा कि अल्लाह फ़रमाता है।

﴿وَإِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يَا بَنِيْ إِسْرَائِيْلَ إِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ إِلَيْكُمْ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَاةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُوْلٍ يَأْتِيْ مِنْ بَعْدِيْ اسْمُهُ أَحْمَدُ﴾

"और जब ईसा बिन मरयम नें कहा था कि ऐ इसराईल के बेटो! मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का रसूल होकर आया हूँ मैं अपने से पहली किताब तौरात की तसदीक़ करता हूँ और एक रसूल की शुभ सूचना देता हूँ।"

ईसा अलैहि0 ने एक ऐसे नबी की शुभ सूचना दी जो उनके बाद आएगा और उसका नाम अहमद होगा और अहमद मुहम्मद के नामों में से एक नाम है।

आपकी मां का सपना- आपकी मां ने जिस समय आपको जन्म दिया उन्होंने अपनी आंखों से ऐसा प्रकाश देखा जिससे शाम की धरती बसरा रोशन हो गयी।

2. **नबी सल्ल0 का अरब में पैदा होना-** अरब ऐसी जाति थी जो उस समय की जातियों में सबसे श्रेष्ठ और उच्च मानी जाती थी यहां तक कि इस आध्यात्मिक सुधार और सम्मानित व सभ्य काम के लिए तैयार हो गयी जो दीन इस्लाम के रूप में वहां उतारा गया। यद्यपि यह जाति अज्ञानी, अनपढ़ और मूर्ति पुजा करने वाली, और आपस में लड़ाई झगड़ों के कारण फूट का शिकार थी इस सबके बावजूद अरब जाति अपनी राय और व्यक्तिगत आज़ादी के लिए प्रसिद्ध थी जबकि दूसरी जातियां धार्मिक व सांसारिक दासता का शिकार थीं उनपर इस बात की पाबन्दी थी कि वे ज्योतिषियों के बताए हुए धार्मिक आदेशों के अलावा किसी बात को समझें या किसी सांसारिक या बौद्धिक समस्या में ज्योतिषियों का विरोध करें। जिस प्रकार की उन पर आर्थिक और नागरिक लेन देन की पाबन्दियों थी

और अरब जाति समस्त कार्यो के लिए इन सब पाबिन्दयों से आज़ाद थी जबकि दूसरी जातियां बादशाहों, सरदारों के अधीन थीं। सबसे बड़ी विशेषता जिससे अरब प्रमुख थे वह यह थी कि वे लोगों में सबसे अधिक सुशील थे जबकि दूसरी जातियां हर ओर और पैसों में उनसे अधिक प्रगतिशील थी। अल्लाह ने इस उम्मत को इस महान सुधार कार्य के लिए तैयार किया जो मुहम्मद सल्ल0 के ज़िम्मे आय।

3. **परिवार की शराफ़त**: आपका परिवार शरीफ़ परिवार था अल्लाह का इरशाद है ...

﴿إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا وَآلَ إِبْرَاهِيمَ وَآلَ عِمْرَانَ عَلَى الْعَالَمِينَ﴾

"निस्संदेह अल्लाह ने आदम और नूह को, इब्राहीम और इमरान के परिवार को (जो मसीह के नाना थे) सर्वश्रेष्ठ किया था।"

अल्लाह ने उन लोगों को नुबुवत व मार्ग दर्शान से सुशोभित किया और कुरैशी किनाना से और बनी हाशिम को कुरैश से चुना और बनु हाशिम से मुहम्मद सल्ल0 को चुना। इस प्रकार इसमाईल की सन्तान अगले और पिछले लोगों में सबसे श्रेष्ठ थी जिस प्रकार इसहाक़ की सन्तान बीच के दौर के लोगों में बेहतर थी। अल्लाह ने कबीला कुरैश को इसलिए चुना क्योंकि उन्हें अल्लाह ने बड़े गुणों से सुशोभित किया था मुख्य रूप से मस्जिदे हराम की सेवा और मक्का में आबाद होने के बाद। इसलिए कि यह इसमाइल की सन्तान में गौत्र वंश में सबसे उच्च व श्रेष्ठ थे और सबसे अधिक बोलचाल में अच्छी शैली वाले थे। अल्लाह ने बनु हाशिम को इस लिए

चुना कि वे चरित्र व आचरण वाले थे और लड़ाई व जंग के समय सबसे अधिक संन्धि करने को पसन्द करने वाले थे। यतीम व फ़कीर के लिए सबसे अधिक दयालु थे सार यह कि नबी करीम सल्ल0 का परिवार समस्त जातियों पर श्रेष्ठ चरित्र एवं आचरण की विशेषताओं में प्रमुख था फिर अल्लाह ने मुहम्मद सल्ल0 को बनी हाशिम से चुना और उनको आदम की सन्तान में सबसे बेहतर सरदार बनाया।

4. आप (सल्ल0) का उच्च आचरण: अल्लाह ने आपको बड़ी अच्छी आदतों वाला बनाया। आप नुबुवत से पहले अपनी जाति बल्कि समस्त मानव जाति में अच्छे आचरण और स्वभाव में खरे होने में सबसे बेहतर थे। अनाथ के रूप में पले बढ़े और पवित्र फ़कीर के रूप में जवान हुए फिर आपने विवाह किया और अपनी जीवन साथी के लिए आप प्रिय व निष्ठावान थे। आप और आपके पिता ने कुरैश के धार्मिक व सांसारिक मामलों में से किसी की निगरानी नहीं की और न ही वे कुरैश के लोगों जैसी उपासना करते थे और न उनकी बैठकों में जाते थे आप से कोई ऐसी बात व काम साबित नहीं जिससे पता चलता हो कि आप सरदारी के इच्छुक हों। आप सच्चाई, ईमानदारी और उच्च आचरण के लिए प्रसिद्ध थे इसी कारण नुबुवत के पहले ही आपको श्रेष्ठ सम्मान मिल गया था और कुरैश आपको अमीन (ईमानदार व्यक्ति) के नाम से पुकारते थे। आप इन्हीं गुणों के साथ जवान हुए और आपके पाक शरीर और पवित्र नफ़्स में समस्त अंग बड़े ऊंचे दर्जे तक पहुंचे, आपने कभी किसी माल, पद और ख्याति की इच्छा नहीं

की यहां तक कि आपके पास अल्लाह की ओर से वह्य का आना आरंभ हुआ।

5. **आप उम्मी थे**: अर्थात आप लिखना पढ़ना नहीं जानते थे आपकी नुबुवत की सच्चाई का सबसे बड़ा तर्क यह था कि आपने कभी कोई पुस्तक नहीं पढ़ी और न एक पंक्ति लिखी और न कोई शेअर कहा और न कोई वाक्य लिखा। आप महान दावत और न्याय प्रिय आसमानी शरीअत लेकर आए जिसने सामूहिक बिखराव व फूट को जड़ से उखाड़ दिया और अपने मानने वालों को सदैव के लिए मानव सौभाग्य की ज़मानत दी और उन्हें उनके पालनहार के अलावा किसी अन्य की दासता से आज़ाद कराया। ये सारी चीजें नुबुवत के प्रमाण और उसकी सच्चाई के तर्क व दलीलें हैं।

2: नबी सल्ल0 की वशांवली और उनके जीवन का संक्षिप्त परिचय

आपकी वंशावली यह है- मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्दे मुनाफ़ बिन कुसा बिन मालिक बिन मिर्रह बिन काअ़ब बिन लूई बिन गालिब बिन महसर बिन मालिक बिन नसर बिन किनआन बिन ख़ज़ीमा बिन मदरका बिन इलयास बिन मुज़िर बिन फज़ार बिन मअद बिन अदनान। अदनान परिवार अरब से था और अरब इसमाईल बिन इबराहीम की सन्तान हैं।

आपकी मां आमना बिन्त वहब बिन अब्दे मुनाफ़ बिन ज़ोहर है और जोहर आपके दादा के भाई का नाम है। आपके वालिद अब्दुल्लाह ने आमना से शादी की और उनके साथ उनके घर ही तीन दिन ठहरे रहे और इसी बीच वे गर्भवती हो गयी।

आपका जन्म आमुल फ़ील 571 ई. में हुआ। आप अपनी मां के पेट ही में थे कि आपके वालिद का देहान्त हो गया।

आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब ने आपको पाला पोसा। तीन दिन तक आप की मां ने आपको अपना दूध पिलाया फिर आपके दादा ने आपको दूध पिलाने के लिए हलीमा साअदिया को दे दिया। हलीमा साआदिया ने आपके कारण कई आश्चर्य जनक चीज़ें देखीं।

अपने पति के साथ मक्का एक धीमी गति वाली कमज़ोर सवारी पर आयी थी मगर जब मक्का से लेकर आपको वापस हुई तो आपकी सवारी बहुत तीव्र गति वाली हो गयी और सारी सवारियों को पीछे छोड़ती गयी। सारे सफ़र के साथी यह सब देखकर आश्चर्य कर रहे थे।

हलीमा का बयान है कि आपकी छातियों में दूध बहुत कम था जिसके कारण उनका अपना बच्चा भूख से रोता रहता था और जब आप सल्ल0 ने उनकी छाती मुहं में डाली उस समय से दूध काफी बढ़ गया और अपने बच्चे व आपको दूध पिलाने लगीं यहां तक कि दोनों पेट भर लेते।

हलीमा साअदिया का यह भी बयान है कि उनका क्षेत्र निरंतर अकाल ग्रस्त रहता था और जब आप (सल्ल0) यहां पहुंचे तो वह क्षेत्र हरा भरा हो गया और सम्पन्नता आ गयी।। दो साल के बाद हलीमा आपको लेकर आपकी मां व दादा के पास मक्का आयी मगर हलीमा का आग्रह था कि आपको अभी उनके पास ही रहने दें ताकि बरकतों से लाभान्वित हों। आपकी मां आमना ने दोबारा आपको हलीमा के हवाले कर दिया फिर दो साल के बाद हलीमा आपकी मां के पास आपको लेकर आयीं और उस समय आपकी आयु चार साल थी। फिर आपकी मां ने अपनी मौत तक आपको अपने पास रखा आपकी आयु उस समय छः साल थी फिर आपके दादा मुत्तलिब ने दो साल (मरने तक) आपका लालन पालन किया और अपनी मौत से पहले उन्होंने अपने लड़के और आपके चचा अबु तालिब को आपके लालन पालन की वसीयत की अतएव अबु तालिब ने अपने बच्चों और घर वालों की भांति आपका ध्यान रखा।

आप मक्का वालों की बकरियां चराते और उससे अपनी गुज़र करते। लग-भग बारह साल की आयु में आपने अपने चचा अबु तालिब के साथ व्यापार के उद्देश्य से शाम का सफ़र किया जहां बहीरह राहिब से आपकी मुलाकात हुई। उसने (आप पर अन्तिम नबी की निशानी देखकर) आपके चचा अबु तालिब को आपके बारे में शुभ सूचना दी और यहूदियों की दुश्मनी से उनको सचेत किया। इसके बाद आपने दूसरी बार खदीजा बिन्त ख्वेल्द की ओर से तिजारती सफ़र किया जिसमें

बहुत अधिक लाभ हुआ और खदीजा ने बड़ा भारी पैसा मेहनत का दिया।

खदीजा कुरैश की सुशील व सज्जन और प्रतिष्ठित व धनी और बुद्धिमान महिला थीं। उनको अज्ञानता काल में उनकी सज्जनता व शराफ़त के कारण ताहिरा कहा जाता था और जब उनके गुलाम मैसरा ने सफ़र के दौरान देखे हुए आपके उच्च आचरण वाले हालात बताए और बहीरा राहिब की शुभ सूचना उन तक पहुंची तो उन्होंने आपसे शादी की इच्छा प्रकट की। खदीजा की शादी इससे पूर्व हो चुकी थी और उनके पति का देहान्त हो चुका था। इस प्रकार आप की शादी खदीजा से हुई। उस समय आपकी आयु 25 साल और खदीजा की आयु 40 साल थी। आपने उनकी मौत तक किसी से शादी की और न ही उनकी तरह किसी से मौहब्बत थी। नुबवत के दस साल बाद इनका देहान्त हो गया। आप इनका बराबर ज़िक्र करते इनकी ओर से सदक़ा ख़ैरात करते और इनकी सखियों को उपहार और तोहफ़े देते रहते। आपकी यही वे पत्नी हैं जिनसे सिवाए इबराहीम के आपकी समस्त सन्तानें हुई। इब्राहीम आपकी पत्नी मारियह कुब्तियह से पैदा हुए।

3: वह्य (वही) का आरंभ

जब आपकी आयु 40 साल की हुई आपके शारीरिक, मानसिक अंगों की पूर्ति हो गयी तो सच्चे सपनों के रूप में आप पर वह्न का अवतरित होना आरंभ हो गया अतएव जो चीज़ आप सपने में देखते ठीक वैसी ही नज़र आती, फिर आप

एकान्त में रहने लगे और मक्का में हिरा नामक खोह के अन्दर एकान्त वास धार लिया। आप कई रात अल्लाह की उपासना करते फिर खदीजा के पास आते और खाना पानी लेकर वापस हो जाते यहां तक कि रमजान के मुबारक महीने में आप पर कुरआन का सिलसिला शुरू हुआ और अल्लाह के फ़रिशते जिबरील अलैहि0 ने आकर आपसे कहा..."पढ़िए" आपने फ़रमाया... "मैं पढ़ नहीं सकता। फिर जिबरील ने कहा पढ़िए .. आपने कहा .. मैं पढ़ नहीं सकता। जिबरील ने फिर कहा 'पढ़िए' और आपने कहा मैं पढ़ नहीं सकता। और जिबरील हर तीनों जवाबों के बाद आपको सीने से लगाते और सख़्ती से भींचते और तीसरी बार कुरआन मजीद की सबसे पहले उतरने वाली आयतों को पढ़ा:

﴿إِقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِىْ خَلَقَ. خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ . إِقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ
الَّذِىْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ .عَلَّمَ الْإِنْسَانَ مَالَمْ يَعْلَمْ﴾

"ऐ रसूल! तू अपने रब का नाम पढ़ा कर जिसने सब कुछ बनाया है, इन्सान को अल्लाह ने जमे हुए ख़ून से पैदा किया, अपने रब का नाम पढ़ा कर, तेरा पालनहार बड़ी इज़्जत वाला है। जिसने कलम के ज़रिए लिखना सिखाया, इन्सान जो न जानता था उसको सिखाया"।

ज्ञान का आदेश देने वाली और मनुष्य की पैदाइश का ब्यान करने वाली इन महान आयतों से आप पर वह्न का आना आरंभ हुआ आप अपनी पत्नी खदीजा (रजि0) के यहां गए इस तरह कि आपका दिल धड़क रहा था आप कांप रहे

थे आपने कहा --" मुझे कम्बल उढ़ाओ... मुझे कम्बल उढ़ाओ।"

आपको कम्बल से ढांप दिया गया और जब आपकी घबराहट दूर हो गयी तो आपने खदीजा (रज़ि0) से पूरी घटना सुनायी और शंका प्रकट की कि मुझे अपनी जान का ख़तरा है। खदीजा (रजि0) ने कहा ... "कदापि नहीं... अल्लाह की कसम! आपको अल्लाह कभी भी रूसवा नहीं करेगा आप रिश्तेदारों की मदद करते हैं मोहताज की मदद करते हैं फक़ीरों को सहारा देते हैं। कमजोर को शक्ति शाली बनाते हैं और सत्य को सहयोग देते हैं।"

फिर ख़दीजा (रजि0) आपको लेकर अपने चचेरे भाई वर्का बिन नेफ़िल के पास गयी जो अज्ञानता में ईसाई हो गए थे और इबरानी भाषा में इंजील लिखते थे और बूढ़े व अंधे थे। इनसे खदीजा ने कहा कि मुहम्मद जो कुछ कह रहे हैं इसे सुनिए। वर्का ने कहा "ऐ भतीजे! तुम क्या देखते हो?" आपने वर्क़ा से सारी बातें बता दीं। वर्क़ा ने कहा कि यह वह फ़रिश्ता है जो मूसा अलैहि0 के पास आया करता था काश मैं इस समय जवान होता और उस समय जीवित होता जिस समय तुम्हारी जाति वाले तम्हें निकालेंगें।

आपने वर्का से कहा...."क्या ये लोग मुझे निकाल देंगे"?वर्का ने कहा ...."हां, कोई व्यक्ति तुम्हारी जैसी बात नहीं लाया मगर सारे लोग उसके दुश्मन हो गए और यदि मैं उस समय जीवित रहा तो तुम्हारी ठोस मदद करूंगा।"

फिर वर्का का देहान्त हो गया और वह्न का क्रम रूक गया। तीन साल तक वह्न का क्रम टूटा रहा जिसमें आपकी योग्यता व क्षमता शक्तिशाली और पक्की हो गयी और आपका शौक़ और इच्छा बढ़ गयी,आपने फ़रमाया..."मैं चल रहा था कि मैंने आसमान से एक आवाज़ सुनी, अपनी निगाह मैंने उठायी तो वह फ़रिश्ता नज़र आया जो हिरा की खोह में मेरे पास आया था।" आप का बयान है कि आपने उस से ऐसा भय प्रतीत किया जो पहले भय से कम था। आप अपने घर आए और कपड़ा ओढ़ लिया। फिर अल्लाह ने अपनी यह आयत उतारी:

﴿يَاأَيُّهَا الْمُدَّثِّرْ . قُمْ فَأَنْذِرْ . وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ . وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ . وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ﴾

"ऐ (नबुव्वत का) वस्त्र ओढ़ने वाले, उठ! और अज़ाब से डरा और अपने रब की बड़ाई ब्यान कर और अपने कपड़े और दिल को पाक साफ रख अर्थात शिर्क आदि की नजासत से दूर रख।"

अर्थात ऐ कपड़ा ओढ़ने वाले खड़े हो, लोगों को कुरआन से जगाओ, अल्लाह का संदेश उन तक पहुंचाओ, अपने कपड़े और अपने कर्मों को बहुदेववाद की गन्दगियों से पाक रखो। बुतों को छोड़ दो बुत की पूजा करने वालों से दूर रहो।

फिर इसके बाद वह्न का क्रम बराबर चलता रहा और आप अपने पालनहार के आदेशानुसार उसकी दावत का प्रचार करते रहे। आपकी ओर वह्य की गयी कि आप लोगों को केवल अल्लाह की उपासना और उसके दीन (इस्लाम) की ओर दावत दें जिसको अल्लाह ने पसन्द किया और जिसे अन्तिम दीन ठहराया।

आप (सल्ल0) तत्व दर्शिता व सूझबूझ, अच्छी नसीहत और उत्तम तर्क वितर्क द्वारा अपने पालनहार की ओर बुलाते रहे। अतएव आपकी दावत पर सबसे पहले औरतों में खदीजा, मर्दों में अबु बक्र सिद्दीक़ और बच्चों में अली ने इस्लाम स्वीकार किया। फिर अल्लाह के दीन में लोग दाखिल होते रहे। यह देख कर मक्का के बहुदेव वादी बड़े परेशान हुए और उन्होंने आपको मक्का से निकाल दिया और आपके साथियों को कठोर यातनाएं दी। अतः आपने मदीना की ओर हिजरत (देश परित्याग) की और आप पर वह्य बराबर उतरती रही और आप अपनी दावत, जिहाद और विजयों में लगे रहे यहां तक कि सफल और विजेता के रूप में मक्का वापस आए।

इसके बाद अल्लाह ने दीन को पूर्ण कर दिया और इस्लाम के सम्मान और मुसलमानों के विजयी होने से आपकी आंखों को ठडंक पहुंची। फिर 63 साल की आयु में आपकी वफ़ात हो गयी। इसमें नुबुवत से पहले चालीस साल और 23 साल नबी के रूप में। अल्लाह ने आसमानी सन्देशों का सिलसिला समाप्त किया और जिन्नों व मनुष्यों पर आपका आज्ञा पालन अनिवार्य ठहरा दिया। अतः जिसने आपकी आज्ञा का पालन किया वह दुनिया में सौभाग्य वाला रहा और आखिरत में जन्नत का हकदार हुआ और जिसने आपकी अवज्ञा की वह दुनिया में अपमानित होगा और आखिरत में जहन्नम में दाख़िल होगा।

आपकी वफ़ात के बाद आपके साथी आपके तरीके पर चलते रहे और आपकी दावत का प्रचार करते रहे और उन्होंने

इस्लाम के द्वारा देशों को विजय किया और सत्य धर्म का अच्छी तरह प्रचार व प्रसार किया।

4: आपका चरित्र एवं आचरण

आप (सल्ल0) मनुष्यों में सबसे अधिक सदाचारी थे। नुबुवत से पहले अज्ञानता काल में भी आप इसमें प्रमुख थे और अल्लाह तआला ने आपको अपने इस कथन से सम्बोध किया: ﴿وَإِنَّكَ لَعَلَى خُلُقٍ عَظِيمٍ﴾ "निश्चय ही आप उच्च आचरण वाले हैं"।

अल्लाह ने आपको उत्तम अदब सिखाया और आपका अच्छा प्रशिक्षण किया। कुरआन मजीद आपका आचरण था और आप उससे अदब सीखते और लोगों को इसके द्वारा अदब सिखाते। अतएवं आपके चरित्र एंव आचरण में सें ये चीजें थी कि आप सबसे अधिक नम्र स्वभाव, शान्त भाव, न्याय प्रिय और दानवीर थें आप अपना जूता स्वंय सीते, कपड़े में पेबन्द लगाते और घर में अपने बच्चों की मदद करते और उनके साथ गोश्त काटते। आप सबसे अधिक शर्मीले थे। आप हर एक की दावत कुबूल करते और थोड़ा हदिया भी लेते और बदले में हदिया भी देते।

आप अल्लाह के लिए नाराज होते अपने लिए नहीं। आप कभी कभी भूखे होते तो भूख की सख्ती के कारण अपने पेट पर पत्थर बांधते और जो कुछ पा लेते खा लेते। किसी खाने में कमी न निकालते, खजूर, भुना गोश्त, गेहूं या जौ की रोटी, मिठाई या शहद दूध जो भी चीज पाते खा लेते, आप बीमारों

का हाल पूछने जाते, जनाजों में जाते और दुश्मनों के बीच बिना किसी अगं रक्षक के अकेले चलते। आप सबसे अधिक आवभगत करने वाले थे। आपके बात करने का बड़ा प्रभावी अन्दाज था। दुनिया की किसी भी चीज से आप परेशान नहीं होते। आपको जो भी जायज़ कपड़ा मिलता उसे पहन लेते। जो भी सवारी घोड़ा ऊंट, खच्चर आदि मिलती उसपर सवार हो जाते या पैदल चलते।

आप पीड़ितों कमजोरों के साथ बैठते। गरीबों को ,खाना खिलाते और चरित्र वान लोगों का सम्मान करते। रिश्तेदारों का हक़ देते उनके साथ मिलकर रहते। किसी पर जुल्म व अत्याचार नहीं करते। शिकायत करने वाले की शिकायत सुनते ठीक होती तो उसे दूर करते। आपका अधिकांश समय अल्लाह के मार्ग में गुजरता। आप किसी ग़रीब को तुच्छ नज़र से नहीं देखते और न किसी बादशाह की बादशाहत को महत्व देते। आप निर्धन व बादशाह सब को समान रूप से अल्लाह की ओर बुलाते।

अल्लाह ने आपको बेहतरीन आचरण और पुख्ता राजनीति से सुशोभित किया था यद्यपि आप उम्मी थे अर्थात पढ़े लिखे न थे आप का लालन पालन ग़रीबी व मोहताजी वाले रेगिस्तानी क्षेत्र में यतीम के रूप में बकरियों की देख रेख करते हुआ। अल्लाह ने आपको सारे बेहतरीन आचरण, अच्छे तरीक़े, पहले और बाद में आने वाले लोगों की खबरें और दुनिया और आखिरत में सफल बनाने वाली चीजों की शिक्षा दी। आप हर व्यक्ति की जरूरत की पूर्ति के लिए खड़े हो जाते। आप बुरे स्वभाव और बाजारों में चिल्लाने वाले नहीं थे आप बुराई का

बदला बुराई से नहीं देते थे बल्कि क्षमा करते। आप हर मिलने वाले से सलाम में पहल करते और हर आने वाले का सम्मान करते। आप क्रोध से बहुत दूर रहते और बहुत जल्द राजी हो जाते और लोगों के साथ सबसे अधिक स्नेह का बर्ताव करते और लोगों को सबसे अधिक लाभ पहुंचाते। आप सरलता को पसन्द फ़रमाते। सख्ती को नापंसन्द करते। जो व्यक्ति आपको अचानक देखता आपसे प्रभावित हो जाता और जो जानकार आपसे मिलता आपसे मौहब्बत करता।

आपकी नुबुवत की सत्यता पर अंग्रेज दार्शनिक थामस कार-लायल की गवाही

कोई न्याय प्रिय बुद्धिमान मनुष्य आपकी नुबुवत की पुष्टि किए और मान्यता दिए बिना नहीं रह सकता इसलिए कि आपके सच्चे ईशदूत होने की बहुत अधिक गवाहियां और दलीलें हैं और निश्चय ही विरोधी की गवाही का अपना महत्त्व होता है और अच्छाई वह है जिसकी गवाही दुश्मन भी दें। यहां नोबेल पुरूस्कार प्राप्त प्रसिद्ध अग्रेंज दार्शनिक थामस कार लायल की गवाही प्रस्तुत की जा रही है। उसने अपनी पुस्तक (बहादुर)में नबी करीम सल्ल0 के बारे में अपनी जाति ईसाइयों को सम्बोध करते हुए लम्बी वार्ता लिखी है जिसका एक हिस्सा यह है।

“इस दौर में किसी भी व्यक्ति के लिए बहुत बड़ी लज्जा की बात है कि वह यह माने कि इस्लाम का दीन झूठा है और मुहम्मद झूठे हैं धोखे बाज हैं और हमारे लिए आवश्यक है कि

हम इस तरह की शर्मनाक तुच्छ प्रोपगंडे की जाने वाली बांतों का बचाव करें। इसलिए कि वह सन्देश जिसे रसूल लेकर आया बारह सदियों तक लगभग दो सौ मिलीयन लोगों के लिए रोशन चिराग रहा है। क्या तुम में से कोई इस सन्देश को झूठा और धोखे बाज़ समझ सकता है जिस पर लोगों की एक बड़ी संख्या जीवित रही और उसी पर मरी। मैं तो इस प्रकार का विचार कदापि नहीं रख सकता और यदि झूठ और धोखा लोगों में इस प्रकार प्रचलित और लोकप्रिय हो जाए तो लोगों को मूर्ख और पागल ही कहा जाएगा। बड़े दुख की बात है कि यह विचार इतना बुरा और ये लोग कितने कमज़ोर और दया योग्य हैं।

अत: जो व्यक्ति सांसारिक ज्ञान में किसी दर्जे व स्थान पर पहुँचना चाहता है उसके लिए आवश्यक है कि इन मूर्खों की किसी बात को सत्य न माने इसलिए कि ये बातें कुफ़्र और अधर्म का नतीजा हैं और ये दिलों की गन्दगी, अन्तर्रात्मा के बिगाड़ और शरीर में आत्मा की कमी की दलील हैं शायद दुनिया में इससे अधिक और कुफ़्र पर आधारित राय कभी न देखी हो। और लोगों! क्या तुमने कभी किसी झूठे आदमी को दीन आविष्कार करते हुए और उसे खुल्लम खुल्ला फैलाते हुए देखा है।

अल्लाह की क़सम झूठा आदमी ईंट से घर नहीं बना सकता क्योंकि जब वह मिट्टी और निर्माण में काम आने वाली दूसरी वस्तुओं की विशेषताओं से परिचित नहीं होगा तो घर का निर्माण किस प्रकार कर सकता है और इमारत इस योग्य नहीं होगी कि

अपनी बुनियाद पर बारह सदियों तक स्थापित रह सके जिसमें 20 करोड़ लोग रह रहे हों।

अलबत्ता वह इमारत इस योग्य होगी कि उसके स्तंभ गिर जाएं और वह ढह जाए। "थामस कारलायल" ने यहाँ तक कहा कि इस आधार पर हम मुहम्मद को कभी भी झूठा नहीं ठहरा सकते जो अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए हीले व बहाने की मदद लेता हो बादशाहत के दर्जे तक पहुँचने की इच्छा रखता है। उसने जो संदेश पहुँचाया है वह सच्चा है और स्पष्ट है और उसकी बात सच्ची बात है। हमने उनको जीवन भर शक्तिशाली अक़ीदा, पक्का विश्वास व दृढ़ संकल्प वाला, सज्जन व कृपालु, परिश्रमी और निष्ठावान पाया। पक्षपाती ईसाई और नास्तिकों का कहना है कि मुहम्मद का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत प्रसिद्धि और मान सम्मान की प्राप्ति था।

कदापि नहीं, उस व्यक्ति के दिल में ये सारी चीज़ें न थी बल्कि उसका दिल स्नेह, दयालुता, भलाई और तत्वदर्शिता व सूझ बूझ जैसे गुणों से भरा होता था जो सांसारिक लालच व मान सम्मान के विरूद्ध हैं।

"अतः हमें ज़ालिमों के धर्म कि मुहम्मद झूठे हैं से विमुखता बरतनी और उनकी अनुकूलता को समर्थन व मूर्खता मानना चाहिए।" निश्चय ही वह दीन जिस पर मूर्ति पूजा करने वाले अरब ईमान लाए और उस पर दृढ़ता के साथ जमें रहे इस योग्य है कि वह सत्य और खरा हो और उसको मान्यता दी जाए। इसका प्रकाश चारों ओर फैल गया और उसकी किरणों

ने उत्तर को दक्षिण से और पूर्व को पश्चिम से जोड़ दिया और इस घटना के पश्चात एक सदी भी नहीं गुज़री, यहाँ तक कि अरब राज्य का एक प्रतिनिधि भारत में और एक उन्दलुस में तैयार हो गया और इस्लाम की पूंजी ने उच्चता व सज्जनता के प्रकाश से एक दीर्घ काल को रोशन कर दिया।

इस्लाम की कुछ विशेषताएं

इस्लाम प्राकृतिक दीन और शान्ति व सुरक्षा का धर्म है मानवता को सुख शान्ति, समृद्धि केवल इस्लाम को अपनाने और इसकी शिक्षाओं को जीवन के समस्त स्थलों में लागू करके ही प्राप्त हो सकती है। इस्लाम की महानता उन प्रमुख विशेषताओं से प्रमाणित होती है जो इस्लाम के अलावा दूसरे धर्मो में नहीं पायी जातीं। कुछ विशेषताएं जो इस्लाम की पहचान और कुछ अन्य विशेषताएं जो लोगों की अत्यन्त आवश्यकता व उसकी चाहत को प्रमाणित करती हैं वे निम्न हैं :-

1. **इस्लाम अल्लाह का भेजा हुआ दीन है।** अल्लाह उन चीज़ों को अधिक जानता है जो मुनष्यों के लिए उचित व ठीक हैं: ﴿أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ﴾ "सुनो! जो पैदा करने वाला है वो सब कुछ जानता है और वो बहुत बारीक देखने वाला वह ख़बर रखने वाला है"।

2. इस्लाम मनुष्य की आदि व अन्त और उसकी सृष्टि का उद्देश्य बताता है।

﴿يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيْراً وَنِسَاءً﴾

"लोगों! अपने पालनहार से डरते रहो जिसने तुम को एक जान से पैदा किया, (जिस प्रकार की एक जान अर्थात आदम को पैदा किया) फिर उससे उसका जोड़ा (अर्थात पत्नी) पैदा किया और फिर उन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें फैलाए"।

﴿وَمِنْهَا خَلَقْنَا كُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُ كُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَى﴾ "इसी में से हम ने तुम को (अर्थात तुम्हारे बाप आदम को) पैदा किया है और इसी में हम तुमको लौटा देते हैं और इसी ज़मीन से तुमको एक बार फिर निकालेगें"।

﴿وَمَا خَلَقْتُ الجِنَّ وَالإِنسَ إِلا لِيَعْبُدُوْنِ﴾ "और अल्लाह ने मनुष्य और जिन्न को अपनी उपासना के लिए पैदा किया है"।

3.इस्लाम प्राकृतिक दीन है प्रकृति से इसका कोई टकराव व विरोध नहीं है। ﴿فِطْرَتَ اللهِ الَّتِىْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا﴾ "अल्लाह की बनाई मानव प्रकृति जिस पर अल्लाह ने लोगों को पैदा किया है (सुन लो) अल्लाह की बनावट में तब्दीली ठीक नही"।

4. इस्लाम बुद्धि का सम्मान करता है और सोचने समझने व ज्ञान ध्यान का आदेश देता है और अज्ञानता, अंधे अनुसरण और सही सोच से मुहं मोड़ने की निंदा करता है।

﴿هَلْ يَسْتَوِى الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَايَعْلَمُوْنَ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُوا الأَلْبَابِ﴾

"तुम कहो कि भला ज्ञानी और अज्ञानी बराबर हैं? इसमें संदेह नहीं कि बुद्धिमान लोग ही नसीहत हासिल करते हैं।"

﴿إِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيٰتٍ لِأُوْلِى الأَلْبٰبِ . الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيَامًا وَقُعُوْدًا وَعَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ﴾

"और आसमान और ज़मीन की उत्पत्ति और रात व दिन के आगे पीछे आने में बुद्धिमानों के लिए चिन्ह है। (बुद्धिमान कौन लोंग हैं?) जो खड़े-बैठे और करवट पर लेटे हुए अल्लाह को याद करते रहते हैं। और ज़मीन और आसमान की उत्पत्ति में चितंन मनन करते रहते हैं कि हमारे मौला! तूने उसको अबस (अकारण) नहीं बनाया।"

5. **इस्लाम आस्था व शरीअत है** अतएव वह अपने अक़ीदों और शिक्षाओं में पूर्ण हैं वह केवल वैचारिक और काल्पनिक दीन नहीं। वह समस्त मामलों में पूर्ण है।। सही अक़ीदों, वाले मामलों, अच्छे आचरण व चरित्र पर आधारित है। वह व्यक्तिगत व सामूहिक और दुनिया व आख़िरत का दीन है।

6. **इस्लाम मानव भावनाओं का महत्त्व समझता है** और उनको सही दिशा दिखाता है वह मानव भावनाओं की भलाई के कामों का साधन बनाता है।

7. **इस्लाम न्याय का दीन है** चाहे दोस्त हो या दुश्मन, अपना

हो या पराया। ﴿إنَّ اللّٰهَ يَأمُرُ بِالعَدْلِ﴾ "अल्लाह तुमको न्याय करने का आदेश देता है हर एक के साथ।"

﴿وَإذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَاقُرْبَىٰ﴾

"और जब कोई बात कहने लगो तो न्याय से कहा करो, चाहे कोई तुम्हारा निकट वाला ही क्यों न हो।"

﴿وَلَا يَجْرِ مَنَّكُمْ شَنَانُ قَوْمٍ عَلىٰ ألَّا تَعْدِلُوْا اعْدِلُوْا هُوَ أقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ﴾

"और किसी कौम की दुशमनी से अन्याय न करने लगो बल्कि हर हाल में न्याय ही किया करो क्योंकि न्याय परहेजगारी के बहुत ही निकट है।"

8. **इस्लाम सच्चे भाईचारे का दीन है** अतएव सारे मुसलमान दीनी भाई हैं। उनके बीच देश, जाति, रंग अन्तर पैदा नहीं कर सकते अतएव इस्लाम में जाति, रंग, नस्ल का पक्षपात नहीं। इस्लाम में श्रेष्ठता का स्तर अल्लाह का डर है।

9. **इस्लाम ज्ञान का दीन है** अतएव ज्ञान हर मुसलमान मर्द व औरत पर अनिवार्य है और ज्ञान विज्ञान को उच्च दर्जा प्रदान करता है।

﴿يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَالَّذِيْنَ أُوْتُوا العِلْمَ دَرَجٰتٍ﴾

"अल्लाह तुम ईमानदारों और ज्ञानियों के दर्जे बुलन्द करेगा अर्थात वह दुनिया में मौहब्बत और आखिरत में मुक्ति पाने वाले होंगे"।

10. **अल्लाह ने इस्लाम स्वीकार करने वाले और इसके अनुसार जीवन यापन करने वाले हर व्यक्ति व जमाअत को**

सौभाग्य सम्मान और मदद का वायदा किया है।

﴿وَعَدَاللّٰهُ الَّذِيْنَ آمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوْا الصَّالِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا يَعْبُدُوْنَنِىْ وَلَا يُشْرِكُوْنَ بِىْ شَيْئًا﴾

"जो लोग तुम में से ईमान लाएंगे और सदकर्म भी करेंगे तो अल्लाह वायदा करता है कि उनको जमीन पर शासक बना देगा जैसा उसने उनसे पहले लोगों को हाकिम बनाया था और उनके दीन को स्वयं अल्लाह ने उनके लिए पसंद किया है। मज़बूत कर देगा और उनको भयभीत होने के बाद जो इस समय दुशमनों की तरफ से उनको भय हो रहा है। उनको अमन होगा, (बस) इसके बाद वे मेरी बन्दगी करेंगे और मेरे साथ किसी को साझी न करेगें।"

﴿مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِنْ ذَكَرٍ اَوْاُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيَاةً طَيِّبَةً وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَاكَانُوْا يَعْمَلُوْنَ﴾

"जो कोई ईमानदार होकर सदकर्म करे पुरूष हो या माहिला (किसी भी कौम का हो) तो हम उनको पाक़ीज़ा जिन्दगी देंगे और हम उनको उनके कामों से भी अच्छा बदला देंगे।"

11. इस्लाम में समस्त कठिनाइयों व समस्याओं का समाधान मौजूद है इसलिए कि इस्लामी शंरीअत और उसके नियम ईश्वरीय हैं जो कभी निरस्त नहीं किए जा सकते ।

12. इस्लामी शरीअ़त के नियम सारी दुनिया का मार्ग दर्शन

करने वाले नियमों में सबसे अधिक मज़बूत हैं और अधिकारों के मामले में, आपसी विवाद और आवश्यकता के समय सही निर्णय लेने में अधिक सक्षम हैं।

13. इस्लाम हर समय और हर जगह और हर जाति व अवस्था के लिए उचित दीन है बल्कि इस्लाम के बिना दुनिया स्थापित नहीं रह सकती। इसी कारण जब दुनिया ने प्रगति की और प्रगति पथ पर आगे बढ़ी तो यह इस्लाम के सत्य होने की दलील है।

14. इस्लाम प्यार व मोहब्बत, दयालुता व स्नेह और मेल मिलाप का दीन है।

15. इस्लाम वास्तविक व व्यवहारिक दीन है।

16. इस्लाम आपसी मतभेदों व विरोधों से बहुत ही दूर है।

﴿ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ﴾

"अगर यह कुरआन अल्लाह के अलावा किसी और की तरफ से होता तो इसमें नाना प्रकार के मतभेद पाते" (विषय और शैली में)

17. इस्लाम अपने मानने वालों को फूट, बिखराव व विनाश से बचाकर रखता है और उनको वैचारिक और वास्तविक सुख शान्ति की ज़मानत देता है।

18. इस्लाम स्पष्ट और सरल दीन है और हर व्यक्ति के लिए इस्लामी शिक्षाओं को समझना आसान बनाता है।

19. इस्लाम खुला हुआ दीन है और वह अपने अन्दर दाख़िल होने वाले का दरवाज़ा बन्द नहीं करता है।

20. इस्लाम बुद्धि, ज्ञान, विवेक और आचरण में वृद्धि करता है अतएव इस्लाम पर अच्छी तरह जमे रहने वाले लोग सबसे उत्तम, बुद्धिमान और पवित्र होते हैं।

21. इस्लाम अच्छे आचरण एवं चरित्र की दावत देता है

﴿خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِيْنَ﴾

"तू दरगुजर करने की आदत ड़ाल और नेकी की राह बतला और जाहिलों से अलग रह।"

﴿اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِيْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيْمٌ﴾

"तुम उसको बहुत अच्छे तरीके से दूर किया करो फिर देखना तुम्हारा दुशमन भी मानो तुम्हारा मुख्लिस दोस्त हो जाएगा।"

22. इस्लाम बुद्धि की रक्षा करता है। इसी कारण वह शराब और नशीली वस्तुओं और हर उस वस्तु को हराम ठहरा देता है जो बुद्धि के बिगाड़ का कारण बनती है।

23. इस्लाम माल की रक्षा करता है इसीलिए वह शासन की प्रेरणा देता है। अमानतदार की प्रशंसा करता है और उससे अच्छे जीवन और जन्नत में दाखिल होने का वायदा करता है। चोरी को हराम ठहराता है और चोर को दंड की धमकी देता है और इस्लाम ने चोरी की सीमा निर्धारित की और वह चोर का हाथ काटता है ताकि व्यक्ति चोरी करने का साहस न कर

सके। तात्पर्य यह कि यदि वह आख़िरत की यातना के डर से चोरी करना न छोड़े तो हाथ काटने के डर से छोड़ दे। इसी कारण जहां पर शरीअ़त के नियमों को लागू किया जाता है वहां के नागरिक अपने माल की ओर से निश्चिन्त होकर सुखी जीवन गुज़ारते हैं बल्कि चोरी करने वालों की कमी के कारण हाथ काटना बहुत कम हो जाता है।

24. **इस्लाम नफ़्स की रक्षा करता है।** इसीलिए उसने किसी की अकारण हत्या करने को हराम ठहरा दिया। और अकारण हत्या करने वाले की सज़ा निर्धारित की कि उसे क़त्ल कर दिया जाए और इसी कारण मुस्लिम देशों में जहां अल्लाह की शरीअ़त लागू है हत्याएं बहुत कम होती हैं।

25. **इस्लाम स्वास्थ्य की रक्षा करता है।** कुरआन व हदीस में इससे संबंधित आयतें व हदीसें बहुत अधिक हैं ।
﴿وَكُلُوا وَاشْرَبُوا وَلَا تُسْرِفُوا﴾ "और खाओ-पियो और फ़िज़ूल खर्ची न करो। अल्लाह को फ़िज़ूल खर्ची करने वाले नहीं भाते।"

उलमा का कहना है कि यह आयत पूरी तरह चिकित्सा संबंधी है। इस प्रकार खाने और पीने में बीच का रास्ता अपनाया जाए यह स्वास्थ्य रक्षा का बहुत बड़ा सबब है, इस्लाम स्वास्थ्य की रक्षा करता है। उसका तर्क है कि उसने शराब को हराम कर दिया और शराब में जो हानियां हैं वे स्पष्ट हैं अतएव गुर्दे और कलेजे को कमज़ोर करती है। इसी प्रकार इस्लाम ने ज़िना (व्याभिचार) और यौनाचार जैसी गन्दगियों को हराम ठहराया। इन दोनों में जो हानियां हैं वे छुपी हुई नहीं हैं।

इन हानियों में सबसे महत्वपूर्ण हानियां वे हैं जिनके बारे में आज बहुत कुछ पता लग चुका है।

इसी प्रकार इस्लाम ने स्वास्थ्य रक्षा के लिए सुअर के मांस को हराम ठहरा दिया जिसके बारे में आज रहस्य खुला कि वह शरीर में बहुत अधिक बीमारियां पैदा करता है। और यह दोनों मानव शरीर के बिगाड़ में बड़ा अच्छा रोल अदा करते हैं और सामान्य रूप से मनुष्य की मौत का सबब बनते हैं।

स्वास्थ्य रक्षा के सिलसिले में वुज़ू के लाभों का महत्वपूर्ण योगदान है और वह दांतों और नाक की बीमारियों से रक्षा करती है।

26. **इस्लाम ज्ञानात्मक सत्यता के साथ सहमत है** इसी कारण यह संभव नहीं है कि सही ज्ञानात्मक तथ्य शरीअत के नियमों से टकराएं।

27. **इस्लाम आज़ादी की ज़मानत देता है** और उसके लिए क़ानून निर्धारित करता है । इस्लाम में विचार की आज़ादी की ज़मानत दी गई है और अल्लाह ने मनुष्य को कान आंख और दिल की शक्तियां प्रदान की हैं ताकि वह सोच विचार करे और सत्यता तक पहुँचे। उसे अच्छी तरह सोचने समझने का आदेश दिया गया है।

इस्लाम में मनुष्य को क्रय विक्रय, व्यापार व घूमने फिरने की पूरी आज़ादी है। जब तक वह बेइमानी, धोखा और बिगाड़ फैलाने में अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन न करे अतएव वह आज़ादी को दूसरों की आज़ादी की भान्ति जुल्म व अत्याचार के

लिए इस्तेमाल करने की अनुमति नहीं देता। अतएव सच्ची आज़ादी वह है जिसे इस्लाम ने प्रस्तुत किया।

28. यह वह आज़ादी है जो मनुष्य के कामों का निर्णय करती है और जिसमें मनुष्य अपने पालनहार का बन्दा होता है और यही आज़ादी का सबसे बड़ा रहस्य है। अतएव मनुष्य जब अपने पालनहार से डर, लालच, मोहब्बत और आशा में जुड़ जाता है तो शेष सारे लोगों से आज़ाद हो जाता है और अपने पालनहार के अलावा न तो किसी से डरता है और न ही आशा रखता है और यह उसकी सफ़लता और प्रतिष्ठा व सम्मान के अनुसार है। सार यह कि इस्लाम कमाल व बुलन्दी और मार्ग दर्शन और सम्मान का दीन है और जिन मुसलमानों के अन्दर कोई कमज़ोरी या कमी हो तो यह उनका दोष है न कि दीन का, और इस्लाम इससे पूरी तरह मुक्त है।

इस्लाम के कुछ गुण

दीन इस्लाम सौभाग्य और सफ़लता का दीन है। उसने मनुष्य को अपने अपने घर वालों, पड़ोसियों और समस्त लोगों के साथ सद व्यवहार की ऐसी शिक्षा दी है जिससे उसका जीवन सुख सम्पदा के साथ बीतता है। रही कुछ मुसलमानों की ग़ैरों के साथ दुर्व्यवहार करने की बात तो यह उनकी अपनी इच्छा के कारण है। उनके इस काम का दीन से कोई संबंध नहीं।

दीन इस्लाम के गुण इस्लाम की भलाई फैलाने व बुराई रोकने की शिक्षा पर सोच विचार करने में हैं। इस पर विचार

करने से सारी बात खुल कर सामने आ जाती है। इस्लाम की यह शिक्षा ऐसे महान कार्यो का आदेश देती है जिनसे सामाजिक मामले संगठित होते हैं और जीवन में सुधार आता है। इस्लाम ने इन ओदशों पर चलने वालों से बड़े भारी इनाम का वायदा किया है और इन से मुहं मोड़ने वालों को दडं की धमकी दी हैं। यहां इस्लाम के कुछ महान आदेशों का उल्लेख किया जाता है।

इस्लाम के कुछ महान आदेश

1. **इस्लाम तुमको** ऐसी बातों का आदेश देता है जो तुम्हें बताती हैं कि तुम एक कुशल, लाभदायक और काम की चीज़ हो, तुम अपने ग़ैरों का अनुसरण नहीं करोगे और अपने ग़ैर पर बोझ नहीं बनोगे।

2. **इस्लाम तुमको** ऐसी बातों का आदेश देता है। जिससे तुम्हारी हस्ती उच्च व श्रेष्ठ होती है और तुम्हें जानवरों जैसा बनने, इच्छाओं की दासता और ग़ैर अल्लाह के सम्मान से दूर रखती हैं।

3. **इस्लाम तुम्हें** अपनी बुद्रि और अंगों को धार्मिक और सांसारकि लाभकारी मामलों में इस्तेमाल करने का आदेश देता है।

4. **इस्लाम तुम्हें** शुद्र एकेश्वरवाद और सही अक़ीदे का आदेश देता है।

5. **इस्लाम तुम्हें** मुसलमानों के दोषों को छुपाने और आरोपों की जगहों से बचने का आ़देश देता है।

6. **इस्लाम तुम्हें** मुसलमानों की ज़रूरतों को पूरा करने और

उनकी परेशानियों को दूर करने के लिए प्रयास करने का आदेश देता है।

7. **इस्लाम तुम्हें** आदेश देता है कि तुम हर मुसलमान से सलाम करने में आगे रहो और अपने मुसलमान भाई की उसकी अनुपस्थिति में मदद करो ।

8. **इस्लाम तुम्हें** बीमार की बीमारी पर, जनाज़े में जाने और कब्रों के दर्शन और अपने मुसलमान भाइयों के लिए दुआ का आदेश देता है।

9. **इस्लाम तुम्हें** आदेश देता है कि तुम लोगों के साथ न्याय करो और उनके लिए वही चीज़ पसन्द करो जो अपने लिए पसंद करो।

10. **इस्लाम तुम्हें** आदेश देता है कि तुम आजीविका की तलाश में सघंर्ष करो अपने को अपमानित व रूसवाई की जगहों से दूर रखो।

11. **इस्लाम तुम्हें** आदेश देता है कि तुम लोगों के साथ प्रेम व दयालुता का व्यवहार करो। और उनके लिए अच्छी चीजों की प्राप्ती के लिए और उन्हें हानि पहुंचाने वाली चीज़ को उनसे दूर करने की कोशिश करो।

12. **इस्लाम तुम्हें** मां बाप के साथ सदव्यवहार, रिश्तेदारों के साथ जुड़े रहने, पडोसियों के सम्मान और जानवरों के साथ नर्मी करने का आदेश देता है।

13. इस्लाम तुम्हें दोस्तों के साथ वफ़ादारी और पत्नी व बच्चों के साथ सदव्यवहार करने का आदेश देता है।

14. इस्लाम तुम्हें लोक लाज, दानवीरता, साहस और सत्य के लिए स्वाभिमान बनने का आदेश देता है।

15. इस्लाम तुम्हें पौरूष, अच्छी आदत और तत्व दर्शिता व सूझ बूझ का आदेश देता है।

16. इस्लाम तुम्हें ईमानदारी, वचन को पूरा करने, अच्छी भावना रखने और भलाई के कामों में जल्दी करने का आदेश देता है।

17. इस्लाम तुम्हें सतीत्व, सयंमी, धैर्य, दृढ़ता, और निर्मलता का आदेश देता है।

18. इस्लाम तुम्हें अल्लाह का शुक्र अदा करने, उससे मोहब्बत, डर और उसपर भरोसा करने का आदेश देता है।

इस्लाम में बुराई मिटाने व उसे रोकने के आदेश

इस्लाम के महान गुणों में से उसके बुराई को रोकने व मिटाने वाले वे आदेश हैं जो मुसलमान को बुराइयों में फंसने से रोकते हैं और उसे ग़लत कामों के दुष्परिणामों से डराते हैं। इस्लाम ने जिन चीजों से रोका है उनमें से कुछ इस प्रकार हैं।

1. इस्लाम ने रोका है कुफ़्र व बहुदेव वाद, अवज्ञा और इच्छाओं के अनुसरण से।

2. **इस्लाम ने रोका है** घमंड, बैर, कपट और ईर्ष्या से।

3. **इस्लाम ने रोका है** दुर्भावना, अंघ विश्वास, कंजूसी और फिजूल खर्ची से।

4.**इस्लाम ने रोका है** दुश्मनी और कठोरता से।

5. **इस्लाम ने रोका है** सुस्ती, काहिली, बुजदिली, कमज़ोरी और उतावले पन, कठोर स्वभाव, निर्लज्जता, अश्लीलता और क्रोध से।

6. **इस्लाम ने रोका है** पीठ पीछे बुराई और चुगली करने से।

7. **इस्लाम ने रोका है** व्यर्थ की बातों, रहस्य खोलने और लोगों का उपहास उड़ाने से।

8. **इस्लाम ने रोका है** गाली गलौंच, फटकार, व्यंग और बुरी उपाघियों से संबोध करने से।

9. **इस्लाम ने रोका है** अधिकता से लड़ाई झगड़ा करने और दंगा फ़साद तक ले जाने वाले बुरे कामों से।

10. **इस्लाम ने रोका है** व्यर्थ की बातों और गलत हस्तक्षेप से।

11. **इस्लाम ने रोका है** गवाही छुपाने और झूठी गवाही देने और सतीत्व वाली औरतों पर आरोप लगाने, मुर्दों को बुरा भला कहने और ज्ञान को छुपाने से।

12. **इस्लाम ने रोका है** दुर्वचन, मूर्खता, सदक़ा व दान पर ताना देने और भलाई करने वाले का शुक्र न अदा करने से।

13. इस्लाम ने रोका है दूसरों का अपमान करने, किसी को उसके बाप के अलावा किसी दूसरे की ओर संबंधित करने, भलाई न करने और भलाई का आदेश न देने और बुराई से न रोकने से।

14. इस्लाम ने रोका है बेइमानी, धोखा धड़ी, वायदा करके तोड़ने और दंगा फ़साद से।

15. इस्लाम ने रोका है मां बाप की अवज्ञा, रिश्तेदारों का हक़ अदा न करने और बच्चों के प्रशिक्षण पर ध्यान न देने से।

16. इस्लाम ने रोका है किसी की टोह में लगने और लोगों के दोषों को तलाश करने से।

17.इस्लाम ने रोका है मर्दों को औरतों से और औरतों को मर्दों की अनुरूपता से, पति का भेद खोलने और पति व पत्नी के भेदों को फैलाने से।

18. इस्लाम ने रोका है शराब पीने, नशीली चीजों के सेवन और जुवा खेलने से।

19. इस्लाम ने रोका है झूठी क़सम खाकर सामान बेचने, नाप तोल में कमी करने, हराम कामों में माल खर्च करने और पड़ोसी को कष्ट देने से।

20. इस्लाम ने रोका है ने चोरी, अवैघ कब्ज़े, किसी की शादी के सन्देश पर सन्देश देने और किसी की खरीदी हुई चीज़ को खरीदने से मना किया है।

21. **इस्लाम ने रोका है** अपने भागीदार के साथ बेइमानी करने, बिना अनुमति मंगनी में मिली चीज़ का इस्तेमाल करने, मज़दूर की मज़दूरी में देरी करने या काम पूरा होने के बाद मज़दूरी न देने से।

22. **इस्लाम ने रोका है** हानि पहुंचाने की हद तक अधिक भोजन खाने से।

23. **इस्लाम ने रोका है** आपसी दुश्मनी, एक दूसरे को छोड़ देने अर्थात अलग अलग रहने और मुसलमान भाई को तीन दिन से अघिक छोड़ने से ।

24. **इस्लाम ने रोका है** किसी को शरअी कारण के बिना मारने और लोगों को हथियार द्वारा डराने धमकाने से।

25. **इस्लाम ने रोका है** व्यवभिचार, यौनाचार और अकारण किसी की हत्या करने से।

26. **इस्लाम ने रोका है** काज़ी (न्यायधीश) को ऐसे व्यक्ति से भेंट लेने से, जो अपना मुकदमा पेश होने से पहले न्यायधीश को भेंट न देता रहा हो।

27. **इस्लाम ने रोका है** घूसखोरी से।

28. **इस्लाम ने रोका है** पीड़ितों की मदद न करने से, जबकि वह मदद करने में समर्थ हो।

29. **इस्लाम ने रोका है** बिना अनुमति दूसरे के घर में झांकने से, भले सूराख ही से क्यों न झांके और उन लोगों की बात सुनने से, जो उसके सुनने को नापसन्द करते हो।

30. **इस्लाम ने रोका है** सोसाईटी, व्यक्ति, बुद्धि, सज्जनता और सामान को हानि पहुँचाने वाली हर चीज़ से।

इस्लाम के स्तंभ

इस्लाम का आधार पांच स्तंभों पर स्थापित है।

1. इस बात को दिल व ज़बान से मानना कि अल्लाह के सिवा कोई वास्तविक उपास्य नहीं और मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं। 2. नमाज की स्थापना। 3. ज़कात देना। 4. रमज़ान के रोज़े रखना। 5. अल्लाह के पवित्र घर का हज करना।

स्तंभ का अर्थ

1. अल्लाह के एक मात्र उपास्य होने और मुहम्मद सल्ल0 के अल्लाह का बन्दा व रसूल होने की बात मानना–

इस गवाही का अर्थ यह है कि जुबान व दिल से इस बात को माना जाए कि अल्लाह ही अकेला उपास्य है और उसका कोई साझी व भागीदार नहीं और (हज़रत) मुहम्मद अल्लाह के बन्दे और उसके सन्देष्टा हैं। बहुत से उपास्य होने के बावजूद इन दोनों गवाहियों को एक स्तंभ ठहराया गया है। क्योंकि दोनों गवाहियाँ कर्मो के सही होने की बुनियाद हैं। अल्लाह के लिए मुख्य होने और नबी सल्ल0 का अनुसरण किए बिना कोई कार्य इस्लाम में स्वीकार्य न होगा और इसका मतलब यह है कि केवल अल्लाह की उपासना की जाए और नबी सल्ल0 के बताए हुए तरीकों पर ही अल्लाह की उपासना की जाए। इस बात का केवल जुबान से गवाही देना ही पर्याप्त नहीं बल्कि इन बातों पर अमल करना भी आवश्यक है अर्थात इसको प्रेम पूर्वक, निष्ठा के साथ, सच्चे मन से और आज्ञा पालन के साथ स्वीकार किया जाए।

मुहम्मद सल्ल0 की गवाही का मतलब यह है कि जिन चीजों का आपने आदेश दिया है उनमें आपका पालन किया जाए और जिन चीजों की सूचना दी है उनको माना जाए और जिन चीजों से रोका गया है उनसे रूका जाए और आपके बताए हुए तरीके ही पर अल्लाह की उपासना की जाए। इन दोनों गवाहियों के अनेक लाभ हैं जैसे दूसरों के अनुसरण और लोगों की गुलामी से दिल व जान को आज़ाद करना।

2. नमाज़ स्थापित करना–

अर्थात सही तरीके पर नमाज़ को उसके निर्धारित समयों पर अदा करते हुए अल्लाह की उपासना करना। रात और दिन में इस्लाम में फ़र्ज़ नमाज़ें पांच हैं फ़ज्र जुहर, असर, मग़रिब और इशा।

नमाज़ के लाभ–नमाज दिल की व्यापकता, आंख की ठंडक, बुद्धि की शक्ति, चुस्ती की प्राप्ती, उदासीनता को दूर करने का सबब है और नमाज अश्लील और बुरी बातों से रोकती है। नमाज़ से मुसलमानों के बीच आपसी सम्पर्क पैदा होता है।

3. ज़कात देना–

अर्थात ज़कात की चीजों में से उचित मात्रा में ज़कात के हकदारों में खर्च करके उनकी मदद करना। इस तरह एक मुसलमान अपने माल से निर्धारित साधारण हिस्सा निकाले और उसे हकदार फ़क़ीरों और मोहताजों में खर्च करे।

ज़कात के लाभ–कंजूसी से दिल को स्वच्छ करना, माल का बढ़ना, मुसलमानों की ज़रूरत पूरा करना, मुसलमानों के बीच प्रेम का आम होना, स्वार्थ, स्वाभिमान से मुक्ति पाना, ईर्ष्या से

सुरक्षित होना, दयालुता और कृपालुता की प्राप्ती और ,दूसरों की परेशानी का आभास करना और उनका ध्यान रखना।

4. रमज़ान के रोज़े रखना-

अर्थात रमज़ान के दिनों में रोज़ा तोड़ने वाली चीजों से रूक कर अल्लाह की उपासना करना। इस तरह एक मुसलमान अल्लाह की उपासना के रूप में रमज़ान के पूरे रोज़े रखना अर्थात सुबह सादिक़ से सूर्य अस्त होने तक खाना पीना और पत्नी से संभोग को छोड़ दे।

रोज़े के लाभ- आत्मा को शुद्र करना, नफ़्स को सभ्य बनाना और उसे तुच्छ चीजों से उच्च करना और उसे अल्लाह की स्वेच्छा की प्राप्ती के लिए पसन्दीदा चीजों के छोड़ने, सब्र और मुसीबतों को सहन करने योग्य बनाना।

5. काबा का हज करना-

अर्थात हज की अदाएगी के लिए काबा जाने का इरादा करके अल्लाह की उपासना करना और चाहे जीवन में एक बार हो उस व्यक्ति के लिए जो ख़ाना काबा तक पहुंचने की शक्ति रखता हो।

हज के लाभ- आख़िरत को याद करना, अल्लाह की समीपता की प्राप्ती के रूप में आर्थिक व शारीरिक प्रयास करने पर नफ़्स को तैयार करना, मुसलमानों के बीच आपसी परिचय और मोहब्बत का प्राप्त होना।

ये इस्लाम के पांच स्तंभ हैं और सार में इनके ये कुछ लाभ हैं।

इस्लामी अक़ीदों की बुनियादें

इस्लामी अक़ीदा अल्लाह और नबी सल्ल0 की ख़बरों, पूर्ण आदेश और परोक्ष की चीजों पर ईमान लाने का नाम है। इस्लामी अक़ीदे के छः स्तंभ हैं।

1. अल्लाह पर ईमान लाना। 2. फ़रिश्तों पर ईमान लाना।
3. किताबों (आसमानी) पर ईमान लाना।
4. रसूलों पर ईमान लाना।
5. आख़िरत के दिन पर ईमान लाना।
6. भली व बुरी तकदीर पर ईमान लाना।

1: अल्लाह पर ईमान लाना

अल्लाह पर ईमान लाना असल काम, महत्वपूर्ण चीज़ और सबसे उत्तम ज्ञान है। अल्लाह पर ईमान लाने का मतलब है इस बात पर अटूट विश्वास रखना कि अल्लाह मौजूद है और वही हर वस्तु का स्वामी है और पालनहार है, वही अकेला पैदा करने वाला है, सारी कायनात को चलाने वाला है और वही उपासना का हक़्दार है। वह अकेला है। उसका कोई साझी व भागीदार नहीं और वही सम्पूर्ण और महान गुणों वाला है और वह हर दोष से मुक्त और मनुष्य की अनुरूपता से स्वच्छ है।

यह ईमान हर मनुष्य की प्रकृति में मौजूद है अतएव हर मनुष्य अपने पैदा करने वाले के ईमान पर पैदा किया गया है और उस प्रकृति की आवश्यकता से उसी समय बनता है जब

इस अक़ीदे से फेरने वाली बाहरी वस्तु उसके समक्ष घटित होती हैं। अल्लाह का इरशाद है:

﴿فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا﴾ "अल्लाह की बनाई हुई मानव प्रकृति जिस पर अल्लाह ने लोगों को पैदा किया है अपनाओ।

अल्लाह तआला की प्रकृति का मतलब इस्लाम है इसी लिए जब कोई मनुष्य चाहे इन्कारी ही क्यों न हो किसी पेरशानी और मुसीबत में फंसता है तो वह अपने पालनहार की ओर पलटता है ताकि वह इस मुसीबत को दूर कर दे, हर मनुष्य के प्रकृति पर पैदा होने का मतलब यह है कि वह अपने पैदा करने वाले की मोहब्बत उसके अस्तित्व और उसकी उपासना को मानने, वचन दे देने पर पैदा किया जाता है। इसी लिए नबी सल्ल0 ने फ़रमाया–

हर बच्चा प्रकृति पर अर्थात इस्लाम पर पैदा होता है। इसलिए आप सल्ल0 ने यह नहीं कहा कि उसके मां बाप उसे मुसलमान बना लेते हैं। अतएव मां बाप भी बच्चे को उसकी असल प्रकृति से यहूदियत की ओर या ईसाइयत की ओर या मजूसियत की ओर या उसके लिए प्रकृति के विरूद्ध दीन की ओर कर देते हैं फिर बुद्धि सुशील प्रकृति की पुष्टि करती है और पूरी तरह अल्लाह पर ईमान लाने पर निर्देश देती है अतएव जो व्यक्ति इस दुनिया और इसके अन्दर दूसरी स्रष्टि आसमान, धरती पहाड़, दरिया मनुष्य व जानवर आदि को देखेगा उसे इस बात का विश्वास होगा कि इस ब्रहमांड का पैदा करने वाला

कोई है और वह वही अल्लाह है जो सर्व शक्तिमान है। इस सिलसिले में बौद्धिक विभाजन तीन चीजों से बाहर नहीं होगा,

1. **या तो यह स्रष्टि किसी पैदा करने वाले के बिना यूं ही अस्तित्व में आ गयी है।** यह बात बड़ी अजीब और असभंव है। बुद्धि किसी भी प्रकार इसे असत्य समझती है इसलिए कि हर बुद्दिमान जानता है कि कोई चीज बिना किसी पैदा करने वाले के नहीं बन सकती।

2. **या फिर मनुष्यों व अन्य जीवों ने अपने आपको स्वयं पैदा कर लिया।** यह बात भी बड़ी अजीब व असभंव है इसलिए कोई भी व्यक्ति इस बात पर विश्वास नहीं रखता है कि कोई चीज अपने आपको पैदा नहीं कर सकती इसलिए कि वह अपने अस्तित्व से पहले कुछ नहीं थी तो फिर कैसे वह अपने को पैदा करने वाली हो सकती है। और जब ये दोनों सूरतें ग़लत ठहरी तो तीसरी चीज का नाम सामने आता है और वह है।

3. **इन समस्त प्राणियों का कोई पैदा करने वाला, जिसने इनको पैदा किया और अस्तित्व दिया है** वही अल्लाह है जो सदैव से है और सदैव रहेगा। अल्लाह ने कुरआन के अन्दर इस बात की ठोस और बैाद्बिक दलील का उल्लेख किया है: ﴿أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ﴾ "क्या ये लोग बिना किसी चीज़ के पैदा हो गये हैं? या खुद ही अपने ख़ालिक़ हैं? अर्थात ये लोग बिना किसी पैदा करने वाले के पैदा नहीं किए गए और

न ही इन्होंने अपने आपको पैदा किया हैं तो यह चीज़ प्रमाणित हो गयी कि इन सबका पैदा करने वाला अल्लाह है। इस प्रकार जीव के लिए पैदा करने वाले का होना आवश्क है और हर प्रभाव के लिए प्रभाव पैदा करने वाला आवश्क है और हर अस्तित्व में आने वाली वस्तु के लिए अस्तित्व में लाने वाले का होना आवश्यक है और हर वस्तु के लिए उसका बनाने वाला आवश्यक है।

ये तथ्य ग़ैर मुस्लिम बुद्विजीवियों के निकट भी जाने माने हैं और जो व्यक्ति (अल्लाह के ज्ञान के दौर में उजागर होता है) किताब में चिंतन मनन करेगा जिस किताब को खगोलशास्त्र व पदार्थ विज्ञान के तीस विद्वानों ने लिखा है तो उसे विश्वास होगा कि सच्चा विद्वान मोमिन ही हो सकता है और सामान्य आदमी मोमिन ही होगा और कुफ़्र व नास्तिकता कम पढ़े लिखे विद्वानों की ओर से ही ज़ाहिर होते हैं।

और उल्लिखित किताब से मिलती जुलती दूसरी किताब है जिसका नाम (मनुष्य अकेला स्थापित नहीं रह सकता) और जिसका अनुवाद अरबी भाषा में (ईमान व ज्ञान की दावत देता) है के शीर्षक से किया गया है और इस किताब का लिखने वाला (क्रेसी मोरेसन) है जो साइंस अकादमी न्यूयार्क के पूर्व ,अध्यक्ष अमेरिकन इन्स्टीटयूट न्युयार्क, नेश्नल रिसर्च आकादमी यूनाइटेड़ स्टेटस की कार्यकार्णी का सदस्य, अमेरिकी म्यूज़ियम फार नेचरल हिस्ट्री का सहयोगी, ब्रिटिश किंग इन्स्टीटयूट का आजीवन सदस्य है। मोरेसन ने अपनी किताब

के अन्दर लिखा है--"पैदाइशी रूप से मनुष्य की प्रगति और ज़िम्मेदारी का आभास अल्लाह पर ईमान लाने की निशानियों में से एक निशानी है।

दूसरी जगह लिखा है-"दीनदारी मनुष्य की रूह का पता देती है और उसे धीरे-धीरे बुलन्द करती है यहां तक कि मनुष्य अल्लाह से संबंध का आभास करने लगता है। और अल्लाह से मनुष्य की दुआ कि अल्लाह उसकी मदद करे एक प्राकृतिक चीज़ है।

आगे लिखता है- सम्मान, मान, सज्जनता व श्रेष्ठता नास्तिकता व अधर्मवाद से प्राप्त नहीं होते और उसका कहना हैं कि चूंकि हमारी बुद्वि का दायरा सीमित है इसलिए हम असीमित की सत्यता को नहीं जान सकते और इसकी बुनियाद पर हमारे लिए उस सर्व शक्तिमान और समस्त प्राणियों को पैदा करने वाले अल्लाह पर ईमान लाना आवश्यक है जिसने समस्त वस्तुओं के साथ साथ कणों, सितारों और सूर्य को पैदा किया।

अल्लाह की एकमात्रता और उस पर ईमान लाने की बौद्धिक दलील

इस सबन्ध में असख्य बौद्धिक दलीलें हैं इनमें से एक दलील दुआओं का स्वीकार होना है। अतएव बहुत से ज़रूरत मन्द अल्लाह से दुआ करते हैं तो अल्लाह उनकी दुआ को स्वीकार करता है। उनकी मुसीबतों और परेशानियों को उनसे दूर

करता है। अल्लाह का इर्शाद है: ﴿وَقَالَ رَبُّكُمْ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ﴾

"मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी दुआ कुबूल करता हूँ।"

﴿أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ﴾

"और वह कौन है जो परेशान और मुसीबत के मारे की दुआ कुबूल करता है और उसकी परेशानियां दूर करता है।"

﴿وَنُوحًا إِذْ نَادَىٰ مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ﴾

"और नूह को हमने नजात दी जब उसने हमको पुकारा तो हमको पुकारा तो हमने उसकी दुआ कुबूल कर ली।"

﴿إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ﴾

"जब तुम अपने पालनहार से प्राधना कर रहे थे तो उसने तुम्हारी सुनी"

हदीस शरीफ़ के अन्दर इस प्रकार की बहुत सी दलीलें हैं उनमें से सहीह बुखारी के अन्दर अनस बिन मालिक की हदीस है।

"एक देहाती जुमा के दिन मस्जिद में दाखिल हुआ। नबी करीम सल्ल0 खुत्बा दे रहे थे। उस देहाती ने कहा – 'ऐ अल्लाह के रसूल माल बर्बाद हो रहे हैं और बच्चे भूखों मर रहे हैं आप हमारे लिए अल्लाह से दुआ कर दीजिए।' तो आपने अपने दोनों हाथ उठाकर दुआ की तो पहाड़ों की भान्ति बादल इधर उधर उड़ने लगे और आप मिम्बर से उतरे नहीं यहां तक कि मैंने आपकी दाढ़ी से बारिश का पानी गिरते हुए देखा"

फिर दूसरे जुमा में वही देहाती या उसके अलावा कोई खड़ा हुआ और कहा 'ऐ अल्लाह के रसूल! इमारतें गिर गयीं और माल डूब गए आप हमारे लिए अल्लाह से दुआ कीजिए। तो आपने अपने दोनों हाथ उठाए और कहा 'ऐ अल्लाह तू वर्षा हमपर नहीं हमारे आस पास बरसा" अतएव आप अपने हाथ से जिस ओर इशारा करते बादल उधर से छट जाते।"

बौद्धिक दलीलों में नबियों की वे निशानियां हैं जिनको चमत्कार कहा जाता है और ये वे चीज़ें हैं जो आदत के विपरीत और मानव शक्ति से बाहर होती हैं जिन्हें अल्लाह नबियों के हाथों उनकी पुष्टि और उनके लाए हुए सत्य की मान्यता के लिए उजागर करता है अतएव चमत्कार रसूलों को भेजने वाले के अस्तित्व पर यह पूर्णतः दलील है। इसका उदाहरण मूसा अलैहि. की निशानियां हैं इनमें से एक निशानी यह है कि जब मूसा अलैहि0 अपने मानने वालों को लेकर चले तो फ़िरऔन और उसकी सेना ने उनका पीछा किया और जब मूसा और उनके मानने वाले समुद्र पर पहुंचे तो उनके साथियों ने कहाः ﴿إِنَّا لَمُدْرَكُونَ﴾ "कि फ़िरऔन और उसकी सेना हमें पालेंगे।" तो मूसा अलैहि0 ने कहाः

﴿كَلَّا إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهْدِينِ﴾ "कदापि नहीं, मेरे साथ मेरा पालनहार है। वह मेरा मार्ग दशर्न करेगा"।

तो अल्लाह ने मूसा अलैहि0 की ओर वह्न की....

﴿أَنِ اضْرِب بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ﴾ "कि अपनी लाठी दरिया पर मारिए"।

तो अब मूसा अलैहि0 ने अपनी लाठी दरिया पर मारी तो दरिया में बारह खुश्क रास्ते बन गए। इस तरह मूसा और उनके मानने वालों ने दरिया को पार कर लिया और जब फ़िरऔन और उसकी सेना दरिया पर पहुंची तो दरिया ने उनको ढांप लिया। इस तरह मूसा और उनके मानने वाले मुक्ति पा गए और फ़िरऔन और उसकी सेना दरिया में डूब गयी और इन्हीं में से ईसा अलैहि0 की निशानी है जबकि वे अल्लाह के आदेश से मुर्दों को जीवित करते और उन्हें उनकी क़ब्रों से निकालते थे। और इसी तरह नबी सल्ल0 की उंगलियों से पानी का निकलना।

इसी प्रकार जब मक्का के काफ़िरों ने आपसे निशानी मांगी तो आपने चांद की ओर संकेत किया तो चांद दो टुकड़े हो गया और जिसे लोगों ने देखा। ये बौद्धिक चमत्कार हैं जिनको अल्लाह ने अपने रसूलों की पुष्टि में प्रकट किया और जो इनके भेजने वाले के अस्तित्व पर पूरी तरह प्रमाणित होते हैं।

अल्लाह की एकमात्रता और उस पर अनिवार्यतः ईमान लाने की दलील रसूलों की सच्चाई है।

समस्त रसूलों ने नुबुवत का दावा किया और यह दावा या तो लोगों में सबसे सच्चा करेगा या सबसे झूठा। अतएव नबी लोगों में सबसे सच्चे और नुबुवत के दावेदार सबसे झूठे। नबी और रसूल अल्लाह की ओर से वह्य लेकर आए तो अल्लाह ने उनकी प्रशंसा की और मदद की और उनके दर्जे ऊंचे किए और उनकी दुआ स्वीकार की और उनके दुश्मनों का विनाश किया

और यदि ये लोग झूठे होते तो अल्लाह इनको नष्ट कर देता और इनकी मदद नहीं करता जैसा कि अल्लाह ने नुबुवत के दावेदारों के साथ किया। अतः रसूलों के बारे में अल्लाह की पुष्टि इनके सच्चे होने की दलील है और उनका सच्चा होना इस बात की दलील है कि वे अल्लाह की ओर से भेजे गए हैं और इनको भेजने वाला सत्य है और उसकी उपासना सत्य है।

अल्लाह की एकमात्रता की दलील सृष्टि का मार्ग दर्शन है–अतएव अल्लाह ने समस्त जानवारों का उनकी बेहतरी की ओर मार्ग दर्शन किया है अतः कौन है वह हस्ती जिसने बच्चे को जन्म के समय मां की छाती से दूध पीने की रहनुमाई की? यह अल्लाह है ﴿الَّذِىٓ أَعْطَىٰ كُلَّ شَىْءٍ خَلْقَهُۥ ثُمَّ هَدَىٰ﴾ और कौन है वह हस्ती जिसने मनुष्य को शक्ति और बुद्धि प्रदान की और उसे वह चीज़ सिखायी जिसको वह नहीं जानता था? निश्चय ही वह उपासना का अधिकारी पैदा करने वाला अल्लाह है।

2: फ़रिश्तों पर ईमान लाना

फ़रिश्ते अल्लाह की उपासना करने वाली अलौकिक सृष्टि है। उनके अन्दर पालनहार और उपास्य होने की कुछ भी योग्यता नहीं है अर्थात न तो वे पैदा करते हैं न आजीविका देते हैं और न यह जायज़ है कि अल्लाह के साथ उनकी उपासना की जाए। फरिशतों की संख्या बहुत है अल्लाह ही उनकी गिनती कर सकता है। उन पर ईमान लाने के लिए निम्न चीज़े शमिल हैं।

1. उनके अस्तित्व पर ईमान लाना।

2. जिनका नाम मालूम है उनके नाम पर ईमान लाना जैसे जिबरील। और जिनका नाम हमें मालूम नहीं उनपर संक्षेप में ईमान लाना अर्थात यह विश्वास करना कि अल्लाह के बहुत से फ़रिश्ते हैं नामों का जानना आवश्यक नहीं।

3. उनके उन गुणों पर ईमान लाना जिनको हम जानते हैं जैसे : जिबरील की विशेषता। अतएव नबी करीम सल्ल0 ने इस बात की सूचना दी है और उनके छः सौ पंख हैं जिन से क्षितिज को घेर रखा है।

और कभी फ़रिश्ते अल्लाह के हुक्म से आदमी की शक्ल धारण कर लेते हैं जैसे जिबरील के साथ हुआ जबकि अल्लाह ने उन्हें ईसा अलैहि0 की मां मरयम के पास भेजा।

﴿فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا﴾ "फिर जिबरील उसके सामने मनुष्य की शक्ल में आए" और जिस समय कि वह आप के पास आए जबकि आप अपने साथियों के बीच बैठे हुए थे। अतएव जिबरील ने ऐसे व्यक्ति का रूप धारा जिसका कपड़ा बहुत सफेद और बाल बहुत काले थे। उस पर सफ़र के चिन्ह नज़र नहीं आ रहे थे और न आपके साथियों में से उसको कोई जानता था जिबरील आपके पास बैठ गए और अपने दोनों घुटनों को उनके घुटनों से मिला लिया और अपनी दोनों हथेलियों को आपकी दोनों रानों पर रख लिया और आप से इस्लाम, ईमान और एहसान व कियामत और उसकी निशानियों के बारे में पूछा। आपने उनको इनका जवाब दिया। फिर

जिबरील के चले जाने के बाद आपने फ़रमाया – "यह जिबरील थे जो तुम्हें तुम्हारा दीन सिखाने आए थे।" इसी प्रकार वे फरिश्ते जिनको अल्लाह ने इबराहीम और लूत अहैहि0 के पास मानव रूप में भेजा।

4. **फ़रिश्तों के कर्मों पर ईमान लाना** – जैसे अल्लाह की पाकी ब्यान करना और उसकी रात दिन बिना थकान और सुस्ती के उपासना करना, कभी कुछ फ़रिश्तों के विशेष नाम होते हैं जैसे जिबरील अलैहि0 जिनको अल्लाह, नबियों व रसूलों के पास वह्न लेकर भेजता था और मीकाईल अलैहि0 जिन्हें बारिश का काम सौंपा गया और मालिक जिन्हें जहन्नम का दारोग़ा बनाया गया और दूसरे वे फरिश्ते जिन्हें मानव जाति की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी सौंपी गयी।

फरिश्तों पर ईमान लाने के बहुत से लाभ

1. **अल्लाह की महानता उसकी सत्ता व बादशाहत का ज्ञान** इसिलए कि सृष्टि की महानता उसके स्वामी के महान होने की दलील है।

2. **मानव जाति के साथ अल्लाह के ध्यान देने पर उसका शुक्र अदा करना**– क्योंकि अल्लाह ने कुछ फ़रिश्तों को मनुष्यों की सुरक्षा और उनके कामों के लिखने की ज़िम्मेदारी सौंपी।

3. **फरिश्तों के प्रेम द्वारा अल्लाह की समीपता प्राप्त करना** इसलिए कि फरिश्ते अल्लाह की इच्छानुसार काम करते हैं।

3: किताबों पर ईमान लाना

ईमान का यह तीसरा स्तंभ है और कितबों से तात्पर्य वे किताबें हैं जिनको अल्लाह ने अपने रसूलों पर बन्दों की दयालुता के प्रति उनके मार्गदर्शन के लिए उतारा ताकि वे दुनियां व आखिरत का सौभाग्य प्राप्त करें और किताबों को उतारने का उद्देश्य यह है कि केवल अल्लाह की उपासना की जाए जिसका कोई साझी और भागीदार नहीं और ताकि ये किताबें मानव जीवन का संविधान हों, जो हर भलाई की ओर मानवता का मार्गदर्शन करें। उन्हें जीवन और सुख सुविधा दें और जीवन के रास्ते को उनके लिए रोशन करें। किताबों पर ईमान लाने का मतलब कुछ चीज़ों के साथ जुड़ा है।

1. **इस बात पर ईमान लाना कि ये किताबें अल्लाह की ओर से सच्चाई के साथ उतरीं।**

2. **जिन किताबों का नाम हमें मालूम है** उन पर नामों के साथ ईमान लाना जैसे कुरआन मजीद, मुहम्मद सल्ल0 पर उतारा गया और इंजील जो ईसा अलैहि0 को दी गयी और तौरात जो मूसा अलैहि0 पर उतारी गयी और ज़बूर जो दाऊद अलैहि0 को प्रदान की गयी और जिनका नाम हमें मालूम नहीं उन पर ईमान लाना।

3. **किताबों की सही ख़बरों की पुष्टि करना और आखिरी किताब कुरआन मजीद पर अमल करना**– इसलिए कि वह आख़िरी किताब है और निरस्त करने वाली कोई किताब नहीं।

आसमानी किताबें कुछ चीज़ों में सहमत हैं अतएव वे सब अल्लाह की ओर से होने में सहमत हैं। विश्वास सबंधी मामलों में सबका एक उद्देश्य होने में सहमत हैं। इसी प्रकार न्याय, अच्छे आचरण व चरित्र की ओर जुल्म व अत्याचार व बिगाड़ और अधर्म से लड़ने की ओर दावत देती है। अधिकांश शरअी समस्याएं हैं और कुछ शरअी समस्याओं में विरोधाभास। अतएव हर समुदाय की एक शरीअत है जो उसके योग्य है।

पिछली आसमानी किताबों में कुरआन का स्थान

कुरआन अन्तिम आसमानी किताब और सबसे दीर्घ और सम्पूर्ण है उनके बारे में फ़ैसला करने वाली है अतएव इसमें सारी चीज़ें मौजूद हैं जो पिछली आसमानी किताबों में है इसमें आचरण एवं चरित्र की शिक्षा मौजूद है। कुरआन के अन्दर अगले और पिछले लोगों की ख़बरें हैं और इसमें फैसले व आदेश हैं। कुरआन पिछली आसमानी किताबों पर गवाह है अतएव क़ुरआन जिस चीज़ की गवाही दे वह स्वीकार्य है और जिस चीज़ का खडंन करे वह कुत्सित है। इसमें किसी प्रकार की कांट छांट व परिर्वतन नहीं हुआ है। कुरआन उच्च शैली व सरलता और चमत्कार पर आधारित है। अतएव वह अपने शब्दों, अर्थों, भाव शैली, सरलता और अगली पिछली परोक्ष की बातों में चमत्कार है और अपने फ़ैसलों व आदेशों और समस्त शिक्षा सहित चमत्कार है इसी लिए पिछली किताबों पर अमल करने वाला इसका पालन करेगा क्योंकि पिछली सारी किताबों

ने इसका उललेख किया और इसकी शुभ सूचना दी है। ऐसी स्थिति में कुरआन पर ही चलना होगा और वही स्वीकार्य दीन होगा जो कुरआन के अन्दर मौजूद है।

कुरआन मजीद मानवता के लिए अल्लाह का अन्तिम सन्देश है बल्कि वह मनुष्यों व जिन्नों सब के लिए है दूसरी आसमानी किताबों के विपरीत जो विशेष जातियों व ज़मानों के लिए उतारी गयीं थी। कुरआन मजीद किसी प्रकार के हेर-फेर, कमी ज्यादती व परिवर्तन से पूरी तरह सुरक्षित है क्योंकि अल्लाह ने इस की सुरक्षा का ज़िम्मा स्वयं लिया है। अल्लाह फ़रमाता है: ﴿إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ﴾ "हम ही ने कुरआन को (लोगों की हिफाजत के लिए) उतारा है, और हम ही उसकी सुरक्षा करने वाले हैं।" यहां ज़िक्र से तात्पर्य कुरआन मजीद और नबी की सुन्नत है दिलों में कुरआन मजीद का बड़ा गहरा प्रभाव होता है अतएव दिल लगाकर कुरआन का सुनने वाला अपने अन्दर बहुत अच्छी तासीर पाता है यद्यपि वह इसके अर्थ व भाव को न समझता हो और अरबी भाषा भी न जानता हो। यह कुरआन के भेद व रहस्य हैं जो इस की महानता को स्पष्ट करते हैं।

क़ौमों की प्रगति और सफ़लता में कुरआन का बहुत बड़ा हाथ है। अतएव अल्लाह ने कुरआन मजीद द्वारा ही अरब जाति में उच्च कोटि के विद्वान व नेता पैदा किए और उनको सारे लोगों के लिए बेहतरीन उम्मत क़रार दिया जबकि अज्ञानता के अंधकारों मे भटक रहे थे।

कुरआन के गुण

कुरआन मजीद के गहरे प्रभाव कभी समाप्त नहीं होते और बार बार पढ़ने से कुरआन पुराना नहीं होता। अतएव जितना मनुष्य इसको अधिक पढ़ता है उसकी मिठास बढ़ती जाती है।

कुरआन की विशेषता यह है कि अल्लाह ने इस का सीखना और इसका याद करना आसान बना दिया है इसी वजह से मुसलमान बच्चे इसे पूरी तरह ज़बानी याद कर लेते हैं। कुरआन की विशेषता यह भी है कि वह सम्पूर्ण महान और न्यायोचित आदेशों पर आधारित है अतएव इसमें हर छोटी बड़ी चीज़ संक्षिप्त व विस्तार के साथ उल्लेख की गयी है। इस चीज़ की गवाही हर न्यायप्रिय बुद्धिमान व्यक्ति देता है यद्यपि वह ग़ैर मुस्लिम ही क्यों न हो।

'सर विलियम' अपनी हयाते मुहम्मद नामक पुस्तक में लिखता है- "कुरआन मजीद इस बात की बौद्धिक और विवेकपूर्ण तर्कों से भरा पड़ा है कि अल्लाह मौजूद है वही बादशाह है और हर दोष व कमी से पाक है और वह मनुष्यों को उसके अच्छे और बुरे कर्मों का बदला देगा और अच्छी चीज़ों का अनुसरण और बुरी चीजों से बचना सारे मनुष्यों पर अनिवार्य है और हरेक के लिए आवश्यक है कि वह अल्लाह की उपासना करे।"

और जीवन लिखता है कि- "कुरआन मजीद के आदेश धार्मिक और साहित्यिक फ़राइज़ में क़ैद नहीं बल्कि कुरआन सांसारिक व पार लौकिक मामलों की बुनियाद है जैसे फ़िक़ह, एकेश्वरवाद और

अधिकारों व इनाम के आदेश और ब्रहमांड की व्यवस्था, दुष्टों को दंड देना और अधिकारों की सुरक्षा आदि।

सुन्नते नबवी (सल्ल0)

रसूलुल्लाह (सल्ल0) की करनी कथनी गुण, विशेषता या तक़दीर को सुन्नते नबवी (हदीस) कहा जाता है।

सुन्नत कुरआन मजीद की टीका, उसकी व्याख्या और उसके अर्थों को बताती है इसके सार को व्यापक करती है और उन आदेशों को बताती है जिनसे कुरआन खामोश है इस प्रकार यह इस्लामी शरीअत की दूसरी उत्पत्ति है। अल्लाह ने इसकी सुरक्षा की भी ज़िम्मेदारी ली है।

नबी करीम सल्ल0 की हदीसें बहुत अधिक हैं जिन पर उलमा ने विशेष ध्यान दिया है और सही व ज़ओफ में अन्तर किया और उनको न्यायप्रिय हदीस के विद्वानों द्वारा हम तक पहुंचाया है।

किताबों पर ईमान लाने का लाभ

1. **अल्लाह की नेअमत का ज्ञान** जिसने हर जाति पर उनके मार्ग दर्शन के लिए किताबें उतारीं।

2. **अल्लाह की तत्वदर्शिता के ज्ञान** को उसने हर जाति के लिए उसके उचित आदेशों सहित बताया।

3. **मानव विचारों व दृष्टिकोणों की गन्दगी से आज़ादी** जिनमें काम इच्छाओं का दख़ल हो और जिनमें कमी व दोष भी पायी जाती है।

4: रसूलों पर ईमान लाना

यह ईमान का चौथा स्तंभ है। रसूल हर उस मनुष्य को कहा जाता है जिसे कोई शरीअत दी गयी हो और उसके प्रचार का उसे आदेश भी मिला हो। सबसे पहले रसूल नूह अलैहि0 हैं और अन्तिम मुहम्मद सल्ल0 हैं। अल्लाह ने हर जाति में एक रसूल सम्पूर्ण शरीअत के साथ भेजा या नबी नियुक्त किया था पहले की शरीअतें जीवित करने के लिए नबी भेजा।

रसूल मानव सृष्टि है उनके अन्दर ईश्वरत्व व पालन क्रिया की कुछ भी विशेषता नहीं है और इसी वजह से मनुष्यों की तरह उन्हें बीमारी होती है और खाने पीने की भी आवश्यकता होती है रिसालत अल्लाह का चुनाव और उसका अधिकार है यह किसी प्रयास और सघंर्ष से नहीं मिलता। रसूल इन्सानों में सबसे बेहतर और सबसे श्रेष्ठ हैं।

रसूलों पर ईमान लाना निम्न चीजों को साथ मिलाकर अत्यन्त आवश्यक है।

1. रसूलों की रिसालत की सच्चाई पर ईमान लाना आवश्यक है। अतएव जिसने किसी एक भी रसूल का इन्कार किया तो उसने सारे रसूलों का इन्कार किया। अतः जिसने ईसा या मूसा या मुहम्मद या किसी रसूल को झुठलाया तो उसने सारे रसूलों को झुठलाया।

2. जिन रसूलों का नाम हमें मालूम है उनके नाम पर ईमान लाना जैसे इबराहीम, मूसा, ईसा और मुहम्मद और जिनका नाम हमें मालूम नहीं उन पर संक्षेप में ईमान लाना अर्थात यह ईमान लाना कि अल्लाह के कुछ रसूल हैं जिनको अल्लाह ने लोगों की ओर भेजा जिनका नाम जानना ज़रूरी नहीं है।

3. इनकी ख़बरों को सही मानना।

4. अन्तिम रसूल की शरीअत पर अमल करना जो समस्त मानव जाति की ओर भेजा गया है और वह मुहम्मद सल्ल0 हैं।

रसूलों पर ईमान लाने के लाभः

1. अपने बन्दों के साथ अल्लाह की दयालुता का ज्ञान कि अल्लाह ने लोगों की ओर मार्ग दर्शान के लिए रसूल भेजे जिन्होंने बताया कि वह अल्लाह की उपासना कैसे करें और सीध े रास्ते पर कैसे चलें।

2. इस नेअमत पर अल्लाह का शुक्र अदा करना।

3. रसूलों से मोहब्बत और उनका सम्मान करना और उनकी उचित प्रशंसा करना इसलिए कि वे अल्लाह के रसूल हैं उन्होंने ही अल्लाह की उपासना की, उसकी दावत का प्रचार किया और अल्लाह के बन्दों के साथ भलाई की। वह मनुष्यों में सबसे बेहतर और उच्च,अच्छे आचरण वाले हैं।

5: आख़िरत के दिन पर ईमान लाना

आखिरत का दिन क़ियामत का दिन है जिसमें लोग हिसाब और बदले के लिए उठाए जाएंगे। उसे आख़िरत का दिन इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसके बाद कोई दिन न होगा। जन्नती अपने घरों में और जहन्नमी अपनी जगहों पर रहने लगेंगे। अखिरत के दिन पर ईमान लाने का मतलब यह है कि उसके आने की सच्ची तसदीक़ की जाए और इसके अनुसार अमल किया जाए।

आख़िरत के दिन पर ईमान तीन चीजों के साथ

1. **कब्र से उठाए जाने पर ईमान,** अर्थात मुर्दों को जीवित करना जबकि फ़रिशता सूर फूंकेगा और सारे लोग अल्लाह के सामने नंगे पांव, नंगे बदन और बिना ख़त्ना किए खड़े होंगे।

2. **बदला और हिसाब पर ईमान,** अतएव बन्दे का उसके कर्म के हिसाब से हिसाब किताब होगा और उसे बदला दिया जाएगा तो जिसने भलाई की होगी उसे दस गुना सवाब मिलेगा और जिसने बुराई की होगी उसे उसी के बराबर गुनाह मिलेगा और किसी पर जुल्म न होगा।

3. **जन्नत और जहन्नम पर ईमान लाना** कि ये दोनों लोगों का सर्वकालिक ठिकाना है। जन्नत मोमिनों और अल्लाह से डरने वालों का ठिकाना है जन्नत में बहुत सी नेअमतें ऐसी हैं जिनको किसी आंख ने देखा और न ही किसी मानव हृदय पर इसका आभास हुआ। जन्नत में लोग अपने सद कर्मों की दृष्टि से विभिन्न दर्जों पर पदासीन होंगे।

जहन्नम यातना का वह घर है जिसको अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करने वालों के लिए तैयार कर रखा है जहन्नम में दंड व यातना की ऐसी क़िस्में होंगी जिनका अनुभव किसी दिल ने नहीं किया होगा।

आखिरत के दिन पर ईमान लाना- क़ियामत की भयावहता और क़ियामत की निशानियों पर ईमान लाना भी शामिल है।

इसी प्रकार मरने के बाद पेश आने वाली चीजों पर ईमान लाना भी शामिल है।

(क) क़ब्र का फ़ित्नाः दफ़न करने के बाद मुर्दे से सवाल करना जबकि आत्मा उसके शरीर में लौटा दी जाती है और उससे उसके ईश्वर व उसके दीन और उसके नबी के बारे में सवाल किया जाएगा। अल्लाह मोमिनों को सच्चे कथन द्वारा जमाए रखेगा। मोमिन कहेगा मेरा ईश्वर अल्लाह है मेरा दीन इस्लाम है और मेरे नबी मुहम्मद सलल0 हैं। और अल्लाह ज़ालिमों को पथ भ्रष्ट करेगा तो कहेगा हाय.. मैं नहीं जानता। और कपटी व भ्रम में पड़ा हुआ कहेगा.. में नहीं जानता, लोगों से यह कहते हुए मैंने सुना तो मैंने भी कहा।

(ख) क़ब्र की यातना और उसकी नेअमतें: क़ब्र की यातना ज़ालिम, कपटी और इन्कारी के लिए हैं, जबकि वह जहन्नम की गर्मी और कष्टदायक यातना से दोचार होंगे और इनकी क़ब्रें उनपर तंग कर दी जाएंगी। अलबत्ता क़ब्र की नेअमतें सच्चे मोमिनों के लिए होंगी जबकि उनके लिए जन्नत का दरवाजा खोल दिया जाएगा और उनकी क़ब्रों को व्यापक

कर दिया जाएगा और उन्हें आंखों की ठंडक पहुंचाने वाली जन्नत की नेअमतें मिलेंगी।

आख़िरत के दिन पर ईमान के लाभः

1. आज्ञा पालन व बन्दगी की इच्छा करना।
2. अवज्ञा से डरना।
3. दुनिया में समाप्त होने वाली चीज़ों से मोमिन को तसल्ली देना।
4. कष्ट व परेशानियों पर सब्र करना।

मरने के बाद उठाए जाने का इन्कार और इस विचार का खंडन

काफ़िरों ने मरने के बाद उठाए जाने का इन्कार क़िया है इस विचार से कि यह अमल असंभव है। उनका यह विचार कई दृष्टि से असत्य और निराधार है-

(क) शरीअतः

अल्लाह का इर्शादः

﴿زَعَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَن لَّن يُبْعَثُوا قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ وَذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ﴾

"काफिरों को गुमान है कि वह न उठाए जांएगें। तू कहःहाँ मेरे रब की क़सम! अवश्य उठाए जाओगो फिर तुमको तुम्हारे किए हुए कर्मो की खबर दी जाएगी और यह काम अल्लाह पर आसान है।"

(ख) अल्लाह ही ने पहले पैदा किया है और जिसने पहले पैदा किया है। उसके लिए उसको वापस लाना मुशिकल नहीं है।

(ग) ' चेतना - अतएव अल्लाह ने अपने बन्दों को दुनियां में मुर्दों को जीवित कर दिखाया है। जैसे मूसा अलैहि0 की जाति को जबकि उन्होंने कहा- ﴿لَن نُّؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ نَرَى اللَّهَ﴾ "हम तुझे हरगिज नहीं मानेगें जब तक की अल्लाह को अपनी आंखों से न देख लें।"

अल्लाह ने मौत दी फिर उनको जीवित किया। इसी प्रकार उस कत्ल किए जाने वाले की घटना में जिसके बारे में बनी इसराईल ने मूसा अलैहि0 से मतभेद किया तो अल्लाह ने उन्हें गाय ज़िब्ह करने और उसको गाय के हिस्से से मारने का आदेश दिया ताकि अपने हत्यारों के नाम बता दे। अतएव लोंगों ने ऐसा ही किया और अल्लाह ने उस व्यक्ति को जीवित कर दिया और उसने अपने हत्यारे का नाम बता दिया फिर वह मर गया। इसी प्रकार उन लोगों की घटना जो हज़ारों की संख्या में मौत के डर से अपने घरों से निकले तो अल्लाह ने उन्हें मुर्दा किया फिर जीवित किया। इसी तरीक़े से अल्लाह के आदेश से मुर्दों को जीवित करने की वह क्षमता जिसे अल्लाह ने ईसा अलैहि0 को दी थी।

क़ब्र की यातना और उसकी नेअमत का इन्कार और इस विचार का खंडन

कुछ लोग क़ब्र की यातना और उसकी नेअ़मतों का इन्कार करते हैं यह दलील देते हुए कि मय्यित की क़ब्र न तंग होती है और न कुशादा, यह विचार भी कई तरह से असत्य है।

(क) **शरीअत**- अतएव कुरआन व हदीस की बहुत सी दलीलें क़ब्र की यातना और नेअ़मत को सबित करती हैं और इन दलीलों का विरोध, खडंन और झुठलाना जायज़ नहीं।

(ख) **अनुभव** - क़ब्र की यातना को साबित करने वाली व अनुभव करने वाली दलील यह है कि यह नींद के समान है और सोने वाला सपने में यह देखता है कि वह किसी खुले स्थान पर है जहां उसे नेअमतें दी जाती हैं या वह देखता है कि वह किसी दर्दनाक और वहशत भरी जगह पर है और कभी कभी सपने से जाग जाता है और वह इस प्रकार अपने कमरे में अपने बिस्तर पर होता है।

इस संबंध में यह जानना उचित होगा कि क़ब्र की यातना और उसकी नेअ़मत मरने वाले और क़ब्र में दफ़न किए जाने वाले के साथ नहीं बल्कि हर मुर्दे के साथ है चाहे उसे क़ब्र में रखा जाए या फ्रीजर या दरिन्दे का पेट हो या रेगिस्तान में हो, दफ़न न किया गया हो। क़ब्र की यातना इस लिए कहा गया है कि सामान्य रूप से मुर्दो को क़ब्र में रखा जाता है।

6: तक़दीर पर ईमान लाना

तक़दीर: अर्थ है अल्लाह का अपने पूर्व ज्ञान और तत्व दार्शिता के अनुसार इस ब्रहमांड के कार्यो व व्यवस्था की पुष्टि करना अर्थात अल्लाह का चीजों का जानना उसका लिखना उसकी चाहत और समस्त चीज़ों को पैदा करना।

तक़दीर पर ईमान लाने का मतलब: यह है कि मनुष्य इस बात पर ईमान लाए कि अल्लाह, जो कुछ हो चुका है, जो हो रहा है और जो होगा सब को जानता है और यह कि अल्लाह ने जो चाहा हुआ और जो नहीं चाहा, नहीं हुआ। अल्लाह ने समस्त मनुष्य के भाग्य को लिख रखा है अतएव अल्लाह के ज्ञान, उसकी मर्जी व चाहत के बिना कोई चीज़ नहीं घटती और इस बात पर भी ईमान लाए जो चीज़ उसे पेश आयी वह उससे दूर नहीं हो सकती थी और जो उससे दूर हो गयी वह उसे पेश नहीं आ सकती थी। और इसी के साथ यह भी ईमान लाए कि अल्लाह ने उसे अपनी उपासना का आदेश दिया है और अवज्ञा से रोका है फिर वह अल्लाह के सवाब की आशा पर उपासना करे और उसके दंड के डर से अवज्ञा छोड़ दे। जब अच्छाई करे तो अल्लाह की प्रशंसा करे और जब बुराई करे तो अल्लाह से क्षमा याचना की दुआ करे।

इस प्रकार तक़दीर पर ईमान लाना दिल को शान्ति व सन्तोष, सुख व आराम देता है न मिलने वाली चीजों पर दुख नहीं होता और मनुष्य के अन्दर बहादुरी और सब्र की शक्ति पैदा करता है।

इसी वजह से मोमिन भाग्य व तक़दीर पर सन्तोंष के साथ ईमान लाता है। जबकि भाग्य पर ईमान न लाने वालों को कोई सुख व राहत नहीं मिलता। अतएव ग़ैर मुस्लिम देशों में आत्महत्या सामान्य होती है क्योंकि साधारण विपदा पर सब्र नहीं कर सकते लेकिन भाग्य पर ईमान लाने वालों में आत्म हत्या की सामान्य दर भी नहीं पायी जाती। इसलिए वे इस बात पर ईमान लाते हैं कि जो कुछ उन्हें पहुंचती हैं वह अल्लाह की तक़दीर से है और वे इस बात पर भी ईमान रखते हैं कि अल्लाह हर मोमिन बन्दे के लिए भलाई लिखता है यद्यपि फ़ैसला कड़वा ही क्यों न हो मगर उसका परिणाम मोमिन के लिए बेहतर होता है। यदि वह अल्लाह की तक़दीर पर सन्तुष्ट व प्रसन्न हो।

इस्लाम में उपासना का आशय

उपासना की परिभाषा– इस्लाम में उपासना का आशय है अल्लाह के आदेशों पर अमल करके और उसकी मना की हुई चीज़ों से रूक कर उसकी समीपता प्राप्त करना। और उपासना व में वे खुली व छुपी बातें व कार्य भी शमिल हैं जो अल्लाह को पसन्द हैं और जिनके करने से वह खुश होता है उपासना की रूह और उसका सारांश और उसकी वास्तविक्ता अल्लाह के लिए मौब्बत और उसके आज्ञा पालन को साबित करता है।

उपासना की शर्तें: उपासना उसी समय स्वीकार योग्य होगी जब उसमें दो शर्तें पायी जाएं।

1. **अल्लाह के लिए निष्ठा** 2. **नबी करीम सल्ल0 का अनुसरण**: इसका मतलब यह है कि उपासना अल्लाह के लिए मुख्य होना और नबी करीम सल्ल0 के बताए हुए तरीके के अनुसार होना आवश्यक है। अत: उदाहरण स्वरूप नमाज उपासना है जिसे अल्लाह ही के लिए अदा करनी चाहिए और इसी से निष्ठा का पता लग जाएगा और नमाज़ की हक़ीक़त व उसका हाल जो अल्लाह के रसूल सल्ल0 से साबित है उसी तरह नमाज़ पढ़ी जाए और इससे रसूलूल्लाह सल्ल0 की सहमति व आज्ञा पालन साबित हो जाए।

उपासना की शुद्धता के लिए इन दोनों शर्तों का महत्व।
1. अल्लाह ने केवल अपनी उपासना का आदेश दिया है। और

इसके साथ किसी ग़ैर की उपासना करना शिर्क होगा। अल्लाह फ़रमाता है: ﴿وَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ﴾ "तुम निष्ठा के साथ अल्लाह को पुकारा करो।"

2. अल्लाह ने शरीअत को बनाने का काम अपने लिए मुख्य किया है और यह केवल उसी का हक़ है और जिस व्यक्ति ने अल्लाह की शरीअत के विरूद्ध उपासना की उसने अल्लाह के साथ कानून बनाने में शिर्क किया।

3. अल्लाह ने हमारे लिए दीन को पूर्ण कर दिया है तो जो व्यक्ति अपनी ओर से किसी उपासना को गढ़ेगा तो वह दीन में वृद्धि करेगा और दीन में कमी का दावा करेगा ।

4. यदि लोगों को अपनी इच्छानुसार उपासना करने का हक़ होता तो हर मनुष्य के लिए उपासना का एक विशेष तरीका होता और लोगों का जीवन जहन्नम बन जाता, आपसी दुश्मनी स्वभाव के मतभेद के कारण आम हो जाती है। यद्यपि इस्लाम एकता व मिल जुल कर रहने का आदेश देता है।

उपासना की किस्में- उपासना की बहुत सी किस्में हैं। जैसे नमाज़,जकात, रोजा, हज, मां बाप के साथ सद व्यवहार, नातेदारों का हक़ अदा करना, सच्चाई, ईमानदारी, वफादारी, भलाई का आदेश देना, बुराई से रोकना, रास्तों से कष्ट देने वाली चीजों को हटाना, यतीमों, मिसकीनों और जानवरों आदि के साथ अहसान करना और उपासना की किस्मों में गुण गान,तसबीह, दुआ, अल्लाह से पनाह मांगना, उससे मदद मांगना, उस पर भरोसा करना, तौबा व इस्तग़फ़ार करना, सब्र व शुक्र, प्रसन्नता और डर, मोहब्बत, आशा, लज्जा आदि भी उपासना में शामिल हैं।

उपासना की श्रेष्ठता– उपासना अल्लाह का प्रिय और पसन्दीदा उदेश्य है जिसकी वजह से उसने मनुष्य को पैदा किया, रसूलों को भेजा, किताबों को उतारा। और यही वह उद्देश्य है जिसको पूरा करने वालों की प्रशंसा की है और इससे मुहं मोड़ने वालों की निंदा की है

उपासना लोगों को तंगी और परेशानी में डालने के लिए उन पर लागू नहीं की गयी है बल्कि असंख्य भलाइयों और बड़ी हिक्मतों को देखते हुए उपासना लागू की गयी है। उपासना की श्रेष्ठता यह है कि वह दिलों को पाक साफ़ करती है और उनको मानव कमाल के उच्च दर्जों पर पहुंचा देती है और उपासना से बन्दें को हमेशा की खुशी व सुख सम्पदा प्राप्त होती है। अतएव जो व्यक्ति सदैव का सौभाग्य चाहता है उसे चाहिए कि केवल अल्लाह की उपासना करे।

उपासना की श्रेष्ठता यह भी है कि वह बन्दे के लिए भले कामों के करने और बुरे कामों के छोड़ने को आसान बना देती है। परेशानियों के समय उसे तसल्ली देती है मुश्किलों को आसान करती है और बन्दा अल्लाह की उपासना से बन्दों की गुलामी और उनके डर से आज़ाद हो जााता है जिसके कारण वह उच्च व सर बुलन्द हो जाता है। उपासना की सबसे बड़ी श्रेष्ठता यह है कि वह अल्लाह की प्रसन्नता की प्राप्ती, जन्नत की सफ़लता और जहन्नुम से मुक्ति का सबब है।

इस्लाम में महिला का स्थान

इस्लाम ने महिला का स्थान बहुत बुलन्द किया है और उसका ऐसा सम्मान किया है जैसा सम्मान किसी और धर्म ने नहीं किया है। अतएव महिलाएं इस्लाम में पुरूषों की साथी हैं और लोगों में बेहतर वह है जो अपने घर वालों के लिए बेहतर हो। मुसलमान बच्ची को बचपन से दूध पिलाने, पालने और अच्छे प्रशिक्षण का हक़ मिलता है और वह इस अवसर पर आंख की ठंडक और अपने मां बाप और बहन भाईयों के दिल का चैन है और जब वह बड़ी होती है तो सम्मानित और आदर्णीय होती है जिस पर उसका वली सम्मान करता है और उसका लालन पालन करता है और कदापि पसन्द नहीं करता कि उसकी ओर बुरा हाथ उठे, उसे बुरा भला कहा जाए और उस पर ग़लत निगाह उठायी जाए।

और जब वह विवाहित हो जाती है तो पति के घर में अत्यन्त सम्मानित होती है। पति उसका सम्मान करता है उसके साथ अच्छा व्यवहार करता है और उससे कष्टदायक चीजों को दूर करना आवश्यक हो जाता है। और जब वह मां बन जाती है तो उसका अहसान अल्लाह के हक़ से मिल जाता है तो उसकी अवज्ञा और उसके साथ दुर्व्यवहार धरती पर बिगाड़ और शिर्क के साथ मिल जाती है। और जब वह बहन होती है तो मुसलमान को उसके साथ रिश्तेदारी जोड़ने, उसका सम्मान करने का आदेश दिया जाता है और ख़ाला होने की सूरत में अहसान व रिश्तेदारी निभाने हेतु मां का दंर्जा दिया जाता है और

जब वह दादी होती है या नानी होती है तो उसके बच्चों, पोतों और सारे रिश्तेदारों के निकट उसका महत्त्व बढ़ जाता है।

इस्लाम ने महिला का सम्मान इस तरह भी किया है कि उसने महिला को अपने सम्मान व सुशीलता की रक्षा और गन्दी जुबान और ग़लत हाथों व निगाहों से अपने आपको बचाने का आदेश दिया है। अतएव इस्लाम ने महिला को पर्दा व सतर को छुपाने का और बे पर्दगी और अजनबी मर्दों के साथ मिलने से दूर रहने का आदेश दिया है। इस्लाम ने महिला का सम्मान इस तरह भी किया है कि उसने पति को उस पर खर्च करने उसके साथ अच्छी तरह पेश आने का और उसके साथ जुल्म व अत्याचार से बचने का आदेश दिया है।

महिला के संबध में इस्लाम की यह भी एक विशेषता है कि जब पति और पत्नी के बीच मेल मिलाप बाक़ी न रह सके और सम्पन्नता भरा जीवन दोनों बसर न कर सकें तो दोनों एक दूसरे से अलग हो जाएं। अतएव पति को सुधार की समस्त कोशिशों के बाद तलाक की अनुमति दी और पत्नी के लिए जायज़ ठहरा दिया कि पति के ज़ालिम व ग़लत आचरण वाला होने की स्थिति में पति से अलग हो सकती है।

इस्लाम ने महिला का सम्मान इस तरह भी किया है कि उसने मर्द को कई शादियां करने की अनुमति दी है इस तरह मर्द एक से अधिक दो, तीन, चार शादियां इस शर्त के साथ कर सकता है कि वह सबके बीच भरण-पोषण, कपड़ा और रात गुजारने में न्याय करेगा। एक से अधिक शादी करने में

बहुत सी भलाइयां हैं। और बड़ी हिक्मतें हैं जिनका पता इस्लाम पर कीचड़ उछालने और आपत्ति करने वालों को नहीं हो सकता। एक से अधिक शादी करने में निम्न हिकमतें हैं।

1. इस्लाम ने ज़िना (व्यभिचार) को हराम ठहराया। इसे हराम ठहरा देने में सख्ती से काम लिया है इसलिए कि इसके अन्दर असंख्य बड़ी बड़ी खराबियां हैं जैसे वंश का मिलाप, बे शर्मी और महिला का सम्मान व सुशीलता का सामान्य होना। इसलिए कि ज़िना से महिला को ऐसा दोष लग जाता है जो इस पर बस नहीं करता बल्कि उसके परिवार और रिश्तेदारों तक पहुंच जाता है। जिना की हानियों का एक पहलू यह भी है कि ज़िना से पैदा होने वाले बच्चे पर बड़ा अत्याचार होता है। क्योंकि वह अपमान जनक व तुच्छता के साथ बिना किसी वंश व परिवार में जीवन बिताता है।

ज़िना की एक हानि यह भी है कि ज़िना करने वाला शारीरिक और मानेवैज्ञाकि रूप से बहुत सी खतरनाक बीमारियों का शिकार हो जाता है जिनका कोई उपचार नहीं बल्कि कभी कभी तो खतरनाक बीमारियां उसे तबाह व बर्बाद कर देतीं हैं।

और इस्लाम ने जब सख़्ती से ज़िना को हराम ठहराया तो उसने एक जायज़ दरवाज़ा खोला जिसमें मनुष्य को सुख शान्ति और सन्तोष मिलता है और वह है शादी।

निस्सन्देह शादियों से रोकना पुरूष व महिला दोनों के लिए जुल्म है अतएव यह रूकावट कभी ज़िना तक पहुंचा देती है

इसलिए कि महिंलाओं की संख्या हर जगह हर समय पुरूषों से अधिक रही है मुख्य रूप से बुराइयों के दौर में।

अतः एक महिंला पर निर्भर रहने से महिंलाओं की एक बड़ी संख्या बिना शादी के रह जाती है और इसकी वजह से उन्हें तंगी व परेशानी से दो चार होना पड़ता है बल्कि वह भी कभी कभी गुमराही के रास्ते पर चल पड़ती है

2. शादी केवल शारीरिक लाभ ही नहीं बल्कि उसमें सुख चैन है और इसमें बच्चों की नेअ़मत भी है अतएव इस्लाम में बच्चें का एक स्थान है और उस पर मां बाप का बहुत अधिकार है अतएव जब कोई महिला बच्चों को जन्म देती है और सही ढंग से उसका प्रशिक्षण करती है तो यह मां की आंखों की ठंडक होते हैं। अब महिला के लिए यह बेहतर है कि वह किसी पुरूष की सरंक्षकता में सुख शान्ति के साथ जीवन गुजारे जो उसकी देख भाल और रक्षा करे और उसका हर समय ध्यान रखे या यह अच्छा है कि वह अकेली इधर उधर पड़ी जिन्दगी गुज़ारे।

3. महिला के लिए कौन सी चीज़ बेहतर है? इस पति की संरक्षकता में उसकी दूसरी पत्नी के साथ सन्तोष जनक जीवन गुज़ारे या बिना शादी के सिरे से बैठ जाए। समाज के लिए कौन सी चीज़ बेहतर है? कुछ लोग कई शादियों कर लें ताकि समाज अविवाहित महिंलाओं से सुरक्षित रहे या कोई कई शादियां न करे और सोसाइटी दगां फ़साद की आग में झुलसती रहे।

और कौन सी चीज़ श्रेष्ठ है कि आदमी के पास दो,तीन या चार पत्नियां हों या उसके पास एक ही पत्नी हो और बहुत सी प्रेमिकाएं?

4. **कई शादियां करना,** यह अनिवार्य नहीं बहुत से मुसलमान पति कई शादियां नहीं करते क्योंकि उनके लिए एक ही महिला काफी है और वह न्याय पर समर्थ नहीं है इसलिए उन्हें कई शादियों की आवश्यकता नहीं।

5. **महिला का स्वभाव पुरूष के स्वभाव से अलग होता है** अतएव महिला हर समय संभोग के लिए तैयार नहीं होती क्योंकि धर्म ने मासिक दिनों में हर महीने दो हफ्ते या दस दिन रूकावट होती है और निफास के समय प्रायः चालीस दिन तक रूकावट होती है। इन दोनों अवसरों पर इन दिनों में संभोग शरअी रूप से वर्जित है इसलिए कि इसमें बहुत सी हानियां हैं गर्भ के दिनों में भी पति के मुकाबले पत्नी की चाहत कम होती है लेकिन मर्द के अन्दर पूरे साल व महीने इसकी चाहत एक सी होती है इसलिए यदि कुछ लोगों को कई शादियां करने से रोक दिया जाए तो वे ज़िना के अपराधी हो सकते हैं।

6. **कभी पत्नी बांझ होती है** बच्चा नहीं जनती तो पति लड़के की नेअमत से वंचित रह जाता है इसलिए उसे तलाक़ देने के बजाए पति दूसरी शादी कर लेता है और यह बात भी कही जा सकती है कि जब पति बांझ हो और पत्नी बच्चा जनने वाली हो तो क्या औरत को अलग हो जाने का हक़ हासिल है? इसका जवाब है....हां यदि वह चाहे तो पति से अलग हो सकती है।

7. **कभी पत्नी किसी खतरनाक बीमारी का शिकार हो जाती है** जिसके कारण पति की सेवा करने की ताकत नहीं रखती तो उसको तलाक देने के बजाए पति दूसरी शादी कर लेता है।

8. **कभी पत्नी का व्यवहार बुरा होता है।** वह कठोर स्वभाव और दुराचार होती है अपने पति के अधिकारों का ध्यान नहीं रखती तो उसको तलाक देने के बजाए पति दूसरी शादी कर लेता है। पत्नी की वफ़ादारी के लिए संन्तान होने की स्थिति में संन्तान को नष्ट होने से बचाने के लिए।

9. **बच्चा पैदा करने में मर्द की ताकत महिंला की ताकत से अधिक होती है।** अतएव मर्द साठ साल की आयु के बाद भी बच्चा पैदा करने की ताक़त रखता है। महिला कभी कभी सौ साल की आयु या इससे कुछ अधिक तक बच्चा जनने की की क्षमता रखती है लेकिन सामान्य रूप से औरत चालीस साल या इससे कुछ अधिक आयु तक बच्चा पैदा करने की क्षमता रखती है। इस तरह कई शादियां करने से रोकना मुस्लिम समुदाय की नस्ल रोकने जैसा है।

10. **दूसरी शादी से पहली पत्नी को आराम मिलता है** अतएव दूसरी पत्नी पति के बोझ का कुछ हिस्सा अपने ऊपर ले लेगी तो पहली पत्नी को सुख व आराम मिलेगा। इसी करण कुछ अक़लमन्द औरतें जब बूढ़ी हो जाती हैं तो पति को दूसरी शादी करने का मश्विरा देती हैं।

11. **सवाब की तलाश**- कभी मनुष्य किसी मोहताज बे सहारा महिला से उसके भरण पोषण व उसकी देख रेख की नीयत से शादी करता है तो अल्लाह की ओर से उस को इस पर सवाब मिलता है।

12. **अल्लाह ही ने कई शादी करने की अनुमति दी है** अतः वह अपने बन्दे की आवश्यकताओं को अधिक जानता है और उनसे कहीं अधिक उनपर कृपालू है। इस तरह हमारे लिए कई शादियों के सही होने में इस्लाम की हिदायतें स्पष्ट हो जाती हैं। और उन लोगों की नादानी खुल कर सामने आ जाती है जो इस मामलें में इस्लाम और मुसलमानों को बुरा भला कहतें हैं।

इस्लाम ने महिला को विरासत में हिस्सा देकर उसका सम्मान किया है अएतव मां का निर्धारित हिस्सा है पत्नी का भी निर्धारित हिस्सा है और लड़की, बहन आदि का भी हिस्सा है

पूरे न्याय की बात है कि इस्लाम ने विरासत में महिला को मर्द से आधा हिस्सा ठहराया। कुछ मूर्ख इसे जुल्म समझते हैं। और कहते हैं विरासत में मर्द का हिस्सा महिला से दुगना क्यों? जवाब यह है कि इसको अल्लाह ही ने निर्धारित किया है जो तत्वदर्शी व सबकी जरूरतों को जानने वाला है।

इस संबध में इस्लाम का न्याय इस बात से स्पष्ट होता है कि इस्लाम ने पत्नी का भरण पोषण पति पर अनिवार्य किया है और पत्नी के मेहर को भी पति पर जरूरी बताया है।

इस्लाम में महिला का यह स्थान है इस्लाम के अलावा दुनिया का कोई कानून महिला को यह स्थान नहीं दे सकता। इस्लाम ने औरत को सम्मानित और आदर्णीय प्राणी बनाया जबकि इस्लाम के अलावा अन्य धर्मों ने महिला को गुनाहों की जननी ठहराया था सम्पत्ति और जिम्मेदारी का हक़ उनसे छीना। उन्हें अपमान, तिरस्कार व तुच्छता पूर्ण जीवन गुजारने पर विवश किया और उनको नापाक प्राणी समझा।

कुछ मुस्लिम देशों में यदि महिंला के अधिकारों का हनन किया जाता है या इस्लाम की ओर कुछ संबंध रखने वालों की ओर से महिला के अधिकारों को रौंदा जाता है तो यह उनकी कमी व अज्ञानता और दीन इस्लाम से दूरी को दर्शता है। दीन उनके इस व्यवहार से मुक्त हैं। इस ग़लती का इलाज इस्लाम और उसकी शिक्षाओं की और ध्याान देकर ही किया जा सकता है।

वर्त्तमान में पश्चिमी सभ्यता के दीवाने महिलों को शुद्र भौतिक लाभ की चीज़ समझते हैं। शिक्षा, सभ्यता और प्रगति के नाम पर उन्हें बे पर्दा निकलने, श्रंगार व सज धज को दिखाने और शरीर के अधिकांश हिस्सों को खोलने तंग छोटे और बारीक कपड़े पहनने पर तैयार करते हैं। इनमें सुन्दर महिलाओं को विज्ञापन के रूप में प्रस्तुत करते हैं इनके निकट केवल सुन्दर महिलाओं ही का महत्व है और जब कुछ सालों के बाद इनकी सुन्दरता समाम्त हो जाती है तो इनको बेकार और पुरानी मशीन समझ कर फेंक दिया जाता है।

अतएव इस सभ्यता में कम सुन्दर महिला का कोई स्थान नहीं, बूढ़ी मां, नानी, दादी की कोई हैसियत नहीं है। इन महिलाओं को अधिक से अधिक शरण स्थलों व बूढ़ों के घरों में जगह मिलती है। जहां उनका हाल पूछने वाला और उन्हें देखने वाला कोई नहीं होता। लेकिन इस्लाम के अन्दर महिला को बहुत बड़ा स्थान हासिल है। अतएव जब वह बूढ़ी होती है तो उसका सम्मान और बढ़ जाता है।

प्रश्न

पिछले पृष्ठों में जहां दीन इस्लाम की महानता उसकी सम्पूर्णता, उसका न्याय और मानवता को उसकी आवश्यकता बतायी गयी है। कुछ लोगों के मन में यह सवाल पैदा हो सकता है कि जब इस्लाम इतना महान, सम्पूर्ण और न्याययोचित है तो हम मुसलमान इस दौर में सबसे प्रगतिशील क्यों नहीं हैं। और हम क्यों अधिकांश मुसलमानों को दीन के आदेशों से दूर दूर देखते हैं और इस दावे में कितनी सच्चाई है? कि इस्लाम अतिवाद व आतंकवादी का धर्म हैं।

अल हम्दु लिल्लाह इस सवाल का जवाब बड़ा आसान है।

(1) इस दौर में मुसलमानों की हालत इस्लाम की वास्तविकता के प्रतिनिधित्व को नहीं दर्शाती। अतएव जुल्म और संकीर्णता की बात है कि अन्तिम दौर के मुसलमानों की हालत को इस्लाम का प्रतिनिधि चित्र कहा जाए और यह समझा जाए कि इस्लाम ने मुसलमानों से अपमान, तिरस्कार, मतभेद व फूट और भूख को खत्म नहीं किया। न्याय के साथ जो हक़ीकत जानना चाहता है वह दीन इस्लाम की ओर ध्यान दे और इस्लाम से सही चीजें कुरआन मजीद, नबी करीम सल्ल0 की सुन्नत और सहाबा किराम के पवित्र जीवन की रोशनी में देखे। उसे यह बात मालूम हो जाएगी कि इस्लाम हर धार्मिक व सांसारिक भलाई की ओर दावत देता है और वह हर लाभदायक ज्ञान के सीखने पर उभारता है और एकता व मेल जोल और संकल्प की मजबूती की दावत देता है। इस्लाम की ओर संबधित होने वाले कुछ लोगों की बे दीनी किसी भी तरह

दीन का अंश नहीं हो सकती और न ही इसके द्वारा दीन को बुरा भला कहा जा सकता है बल्कि दीन उनकी गलतियों से मुक्त है।

2.मुसलमानों के पीछे रहने का कारण उनकी दीन से दूरी है अतएव मुसलमान सभ्यता में उस समय पीछे रहे और आपसी मतभेद व फूट, तिरस्कार व अपमान से उस समय दोचार हुए जब उन्होंने दीन के अन्दर कोताही से काम लिया और अल्लाह के आदेशों की अवहेलना की।

इस्लाम प्रगति और आगे बढ़ने वाला दीन है और जब मुसलमान अपने दीन पर निष्ठापूर्वक चलते रहे तो सदियों तक सारी दुनिया उनके अधीन रही और उन्होंने उसी दौर में ज्ञान,न्याय और तत्वदर्शिता का झंडा लहराया फिर जब मुसलमानों ने दीन में कोताही की और दुनिया व आखिरत की भलाई तक पहुंचाने वाले संसाधनों को अपनाने में सुस्ती से काम लिया तो उनको विनाश ने आ पकड़ा।

केवल भौतिक प्रगति ही काफी नहीं है बल्कि इसके साथ सत्य धर्म का होना अत्यन्त आवश्यक है । यह दिलों को पाक करता है और आचरण को बुलन्द करता है इसी लिए काफिरों ने जब भौतिक ज्ञान मे प्रगति की और आध्यात्मिक पहलू की अवहेलना की तो वे अपनी गुमराही और तिरस्कार में भटकने लगे तो क्या इसे उनकी भौतिक सभ्यता ने कोई लाभ पहुँचाया? क्या उसकी सभ्यता जुल्म व अत्याचार, लालच, दासता और कमज़ोर जातियों को सताने पर स्थापित नहीं थी? क्या उनमें बेइमानी, चोरी, हत्या और वासना इच्छा, जिन्सी बीमारियां आम नही थी? अतः यह इस बात की सबसे बड़ी दलील है कि

भौतिक प्रगति हानिकारक ही होती है कि जब दीन हक़ से खाली हो जिससे बुद्धि उज्जवल होती है और दिल पाक होते हैं

3. यह दावा कि इस्लाम कट्टरवाद व आतंकवाद का दीन है गलत है और निराघार है अतएव यह बात पूरी तरह झूठ है और इस्लाम से दूर करने का एक प्रयास है इस्लाम दयालुता, नर्मी और क्षमा करने वाला दीन है और अल्लाह के रास्ते में जिहाद के रूप में इस्लाम ने तलवार का इस्तेमाल उसी तरह किया है जिस तरह एक डाक्टर बीमार के शरीर को काटता है ताकि उसकी भलाई के लिए उसका ख़राब खून निकाल दे अतएव जिहाद का उद्देश्य व्यर्थ में खून बहाना और मानवता को परेशान करना नहीं बल्कि इसका उद्देश्य अल्लाह के कलिमें को बुलन्द करना और मनुष्य को मनुष्य की उपसना से मुक्ति दिलाना है और अल्लाह की उपासना की ओर उनका मार्ग दर्शन करना है ताकि सम्मान जनक जीवन गुज़ार सके।

मुस्लिम समुदाय एक आदर्श समुदाय है जिसे लोगों के लिए पैदा किया है और ऐसा उत्तम समुदाय है जिसने अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया तो अल्लाह की मदद से विजयी हुआ फिर उसने दयालुता, स्नेह व प्यार का व्यवहार किया और फ़ैसला किया तो न्याय के साथ फ़ैसला किया और शासन किया तो लोगों को आज़ादी दी और सूझ बूझ व तत्वदर्शिता के सोते खोल दिए

कुछ ऐसे उदाहरण इतिहास की पुस्तको मे भरे पड़े हैं। नबी अकरम सल्ल0 जब अपने दुश्मनों पर विजयी हुए तो जिन लोगों ने आपको और आपके साथियों को हर तरह से सताया था व यातानाएं दी थी तो आपने उमके साथ नम्रता का व्यवहार किया और उन सबको क्षमा कर दिया

और जब मुसलमान क़ैसर व क़िसरा पर विजयी हुए तो उन्होंने बेइमानी नहीं की वचन को नहीं तोड़ा, औरतों से छेड़ छाड़ नहीं की, गिरजों में राहिबों के साथ दुर्व्यवहार नहीं किया, धरती पर बिगाड़ नहीं फैलाया, उत्पात नहीं मचाया, घरों को नहीं ढाया और न ही पेड़ों को काटा और जब सलाहुद्दीन अय्यूबी इन सलीबियों पर विजयी हुए जिन्होंने मुसलमानों को तरह तरह की यातनाए दी थीं तो उन्होनें इनके बादशाह को क्षमा कर दिया और गिरफतार किए गए बीमार बादशाह का इलाज करके उसे छोड़ दिया।

मुसलमानों की इतिहास में इस प्रकार की उदारता, न्याय दया व कृपा करने की अनेक घटनाएं मौजूद हैं जिनसे लोग इस्लाम में दाखिल होते गए। क्या ग़ैर मुस्लिम ऐसा इतिहास प्रस्तुत कर सकते हैं? जवाब वह जिसे लोग सुनते और जानते हैं अतएव हिटलर, मसूलेनी, लेनिन और स्टालिन आदि का इतिहास सबके सामने है इन जैसे शैतानों को युरोप ने पैदा किया जिन्होंने लाखों इन्सानों को मौत के घाट उतारा और जिनसे मानवता को विनाश का सामना करना पड़ा। ये लोग यूरोप की सभ्यता के मुखिया नहीं समझे जाते? तो सरकश व संगदिल कौन लोग हैं और वास्तविक अर्थों में आतंकवादी और कट्टरवादी कौन लोग हैं? कौन हैं वे लोग जो परमाणु बम, विनाशकारी कीटाणु और खतरनाक हथियार बनाते हैं? और कौन हैं वे लोग जो अंतरिक्ष और दरियाओं को विनाशकारी पदार्थो से विषैला करते हैं और कौन हैं वे लोग जो गन्दा मार्ग अपनाते हैं? जिनका न्याय व सज्जनता से कोई सबंध नहीं होता। कौन हैं वे लोग जो महिलाओं को बांझ कर देते हैं? लोगों की आजादी और उनकी जायदाद को छीनते हैं और एड्स फैलाते हैं क्या पश्चिम के

लोग उनके साथ नहीं हैं कौन हैं जो यहूदियों की मदद करता है जो सबसे अधिक आतंकवादी हैं

यही वह स्पष्ट वास्तविकता है और यही वह आतंकवाद है हाँ यह अवश्य है कि सत्य को साबित करने, असत्य को मिटाने और अपनी जान व देश के बचाव के लिए मुसलमानों का जिहाद करना आतंकवाद नहीं है बल्कि यह तो ठीक ठीक न्याय है हां इस सिलसिल में कुछ मुसलमानों से सूझ बूझ का रास्ता अपनाने में जो गलती हो जाती है वह पश्चिम की बर्बरता व जुल्म व अत्याचार के सामने कुछ भी नहीं और इसका जिम्मेदार वह व्यक्ति स्वयं होता है दीन और दूसरे मुसलमान उससे अलग होते हैं और कभी कभी उनकी इस गलती का उचित कारण भी होता है जैसे काफिरों (अल्लाह के इन्कारियों) का मुसलमानों पर अत्याचार करना किसी अनुचित कार्यवाही पर विवश कर देता है इस तरह बुद्धिमान न्यायधीश के लिए आवश्यक है कि वह चीजों को वास्तविकता के साथ जुल्म, झूठ और सकीर्णता से हट कर देखे

मनुष्यों को यदि यूरोप व अमेरिका के तरीके पर आश्चर्य है कि उन्होंने बहुत सी चीजों का रहस्य खोला लेकिन वे दीन इस्लाम की हक़ीक़त को मालूम न कर सके। यद्यपि यह संसार की सबसे उत्तम चीज़ है और उसके वास्तविक सौभाग्य की जमानत है तो क्या वे इस्लाम की असलियत से परिचित हैं? या वे अंधे बन रहे हैं और लोगों को इससे रोक रहे हैं।

समापन और दावत

दीन इस्लाम की महानता बयान करने के बाद और यह बताने के बाद कि यह अल्लाह के निकट मुक्ति का एक मात्र मार्ग है और इसमें हरेक का दाखिल होना आवश्यक है इस्लाम में दाखिल होने की आपको दावत दी जा रही है। आपको चाहिए कि आप इस्लाम में दाखिल होने का तरीका पूछें और उसका जवाब यह है कि मनुष्य इस्लाम में अपनी प्रकृति और असल सृष्टि के साथ दाखिल होता है अतएव हर बच्चा धरती पर प्रकृति अर्थात दीन इस्लाम पर पैदा होता है इस प्रकार बच्चा अपने पालनहार का इकरार करते हुए इससे मौहब्बत करते हुए और उसकी और झुकते हुए पैदा होता है तो जब वह इस प्रकृति पर बाकी रहता है तो मौलिक रूप से मुसलमान होता है और उसके प्रौढ़ व व्यस्क होने के बाद इस्लाम में दाखिल होने के लिए किसी नवीनीकरणा की आवश्यकता नहीं पड़ती।

लेकिन जब वह बच्चा गैर मुस्लिम मां बाप के बीच पैदा होता है और उनका असत्य धर्म स्वीकार कर लेता है तो उस पर अनिर्वाय हो जाता है कि वह अपने पूर्व धर्म को छोड़ कर इस्लाम में दाख़िल हो जाए और इस बात का जुबान व दिल से इक़रार करे कि अल्लाह के अलावा कोई वास्तविक उपास्य नहीं और मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के रसूल हैं फिर उसे चाहिए कि वह धीरे धीरे धार्मिक जानकारी नमाज़ आदि के बारे में प्राप्त करे।

الطريق إلى الإسلام

تأليف

فضيلة الشيخ : محمد بن إبراهيم الحمد

ترجمة

عطاء الرحمن ضياء الله

دار الورقات العلمية للنشر والتوزيع

الرياض ٣٢٦٥٩ ص.ب ١١٤٣٨ هاتف :٤٢٢٨٨٣٧ ناسوخ ٢٩٣٣٤٠٧

Designed By : BANAN 0126773455

الطريق إلى الإسلام

إعداد :
محمد بن إبراهيم الحمد

ترجمة :
عطاء الرحمن ضياء الله

ردمك : ٨ ـ ٢ ـ ٩٥٦٦ ـ ٩٩٦٠

ت: ٤٥٨١٠٠٠ ف: ٤٥٩٢٢١٧ الرياض